ओ३म्

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ३ अंक : 33 १ सितम्बर २०१७ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

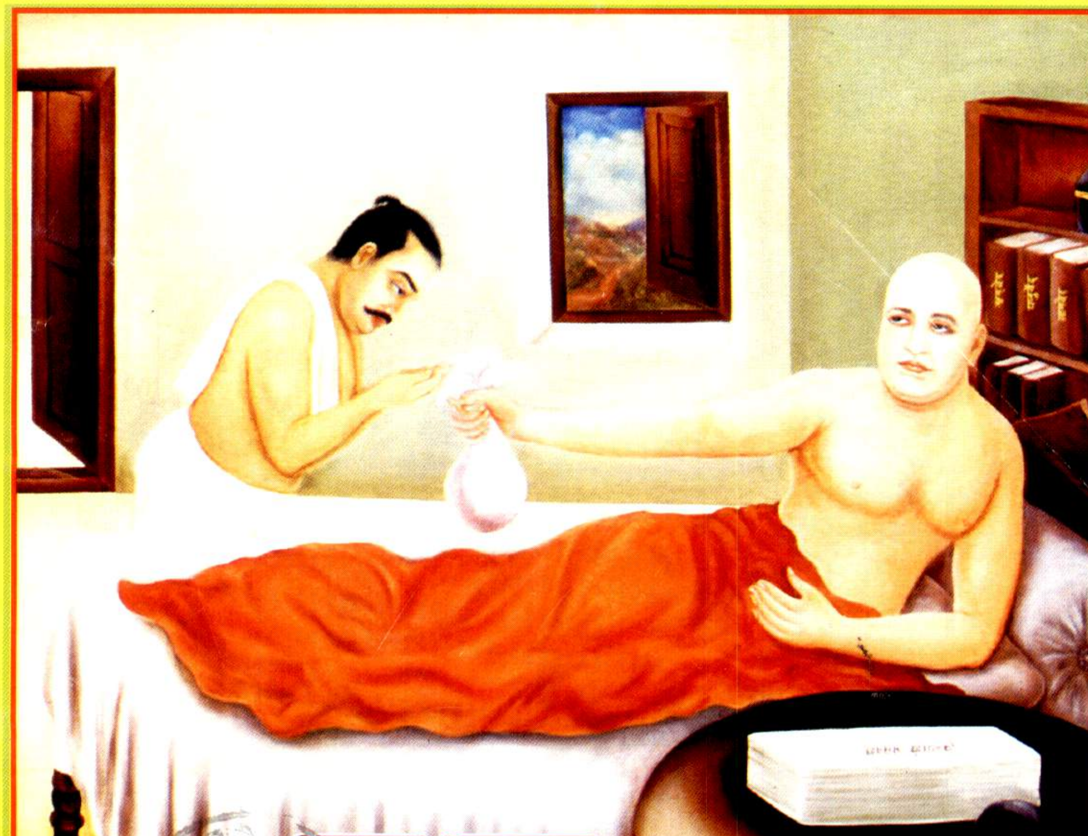

अनुपम क्षमादान

कार्यालय :
महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास
जसवन्त कॉलेज के पास, मोहनपुरा, जोधपुर

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास में
यज्ञ प्रवचन व सम्मान समारोह
नगर आर्यसमाज गुलाबसागर में
ध्वजारोहण
नगर आर्यसमाज गुलाबसागर में हवन व प्रवचन करते हुए

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

वर्ष : ३ अंक : ३३

दयानन्दाब्द : -१९४

विक्रम संवत् : भाद्रपद २०७४

कलि संवत् ५११८

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,११८

मार्गदर्शक

पं. सत्यानन्दजी वेदवागीश,

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक :

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय	४
२.	प्रार्थना	८
३.	वेद वचन	९
४.	बृह्मस्पति का परामर्श....	११
५.	आर्यसमाज का इतिहास..	१२
६.	हिमाचल के राजभवन मे	१८
७.	जन्माष्टमी व स्वतंत्रता दिवस.....	२०
८.	सुख-दुःख की समस्या.....	२१२
९.	यज्ञ,भजन व सम्मान समारोह....	५
१०.	आँखों का निशुल्क	२९
११.	विश्व शांति यज्ञ सम्पन्न....	३०
१२.	समाचार समीक्षा...	३१

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

सम्पादकीय

ब्लू व्हेल: कमजोरों का काल! अर्थात् योग्यतम् ही जीवित रहेगा।

द ब्लू व्हेल गेम को मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) के विद्यार्थी फिलिप बुडेकिन (Philipp Budeikin) ने वर्ष 2013 में बनाया था। 2016 में रूस में ब्लू व्हेल किशोरों के बीच बड़े पैमाने पर उपयोग करने के बाद एक पत्रकार ने एक लेख के माध्यम से उन तथ्यों पर ध्यान आकर्षित किया, जो कई असंबद्ध आत्मघाती पीड़ितों को ब्लू व्हेल से जोड़ते थे। इसके बाद रूस में नैतिक खलबली की एक लहर दौड गई। रूस में आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं के बीच बच्चों को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के आरोप में फिलिप बुडेकिन को पकड़ा गया था. उस वक्त 15 बच्चों ने आत्म हत्या की थी। बाद में फिलिप को जेल की सजा हो गई।

दुनिया भर में ब्लू व्हेल से बच्चों के मरने का सिलसिला अब भी जारी है। इन मौतों का कारण है वो चुनौतियाँ, जो इस खेल को खेलने वाले बच्चों को दी जाती हैं।

यह इंटरनेट पर खेला जाने वाला गेम है, जो दुनियाभर के कई देशों में उपलब्ध है। किन्तु कोई भी इस खेल को स्वयं आरम्भ नहीं कर सकता, वरन् इसके निर्दयी नियंत्रक इसका लिंक भेजते हैं, जिससे इसे अपने सिस्टम पर डाउनलोड किया जाता है। इस गेम को खेलने वाले शख्स के सामने कई तरह की चुनौतियाँ रखी जाती हैं। ये सभी चुनौतियाँ 50 दिन के अंदर पूरी करनी होती हैं। इसमें अंतिम चुनौती के रूप में आत्महत्या को रखा गया है। बुडेकिन ने पुलिस को बताया था कि उसका उद्देश्य समाज की सफाई करना है।

ब्लू व्हेल गेम की एक एडमिन 17 साल की लड़की को पकड़ा गया है। वह रूस की रहनेवाली है। यह गेम रूस में भी कई बच्चों की जान ले चुका है। लड़की पर आरोप है कि जानलेवा ब्लू व्हेल गेम के पीछे उसी का हाथ है। रूसी पुलिस द्वारा गिरफ्तारी का फुटेज जारी किया गया है। आरोपी लड़की मनोविज्ञान की छात्रा है और उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया है। अदालत में हुई पेशी के बाद उसे तीन साल के लिए जेल भेजा गया है। प्राप्त समाचारों और सूचनाओं के अनुसार लड़की शिकार को धमकी दिया करती थी कि अगर उसने ब्लू व्हेल टास्क पूरा नहीं किया तो वह उसे और उसके परिवार का खून कर देगी।

ब्लू व्हेल चैलेंज उन्हीं लोगों को अपना शिकार बनाता है, जो तनाव से जूझ रहे हैं और आत्महत्या करने के बारे में सोचते हैं। इसका पता वे सोशियल मीडिया – फेसबुक, ट्विटर आदि पर पोस्ट पढ़कर लगाते हैं।

इस खेल के जनक बुडेकिन के मुताबिक **जो अपने जीवन का मूल्य नहीं समझते वो समाज के लिए कचरा हैं और उनकी सफाई करना जरूरी है.** यदि एक बार गेम खेलना शुरू कर दिया, तो वो इसे बीच में नहीं छोड़ सकता। यदि गेम को बीच में छोड़ दिया तो एडमिन आपका फोन हैक कर लेगा और फोन की सारी डिटेल हैक होकर एडमिन के पास चली जाएगी। अगर कोई बीच में गेम छोड़ना चाहे, तो एडमिन की तरफ से धमकी मिलती रहती है कि उसे या

फिर उसके माता–पिता को जान से मार दिया जाएगा।

इंटरनेट पर खिलाये जाने वाले इस गेम में 50 दिन तक रोज एक चुनौती बतायी जाती है। हर चुनौती को पूरा करने पर हाथ पर एक कट लगाने के लिए कहा जाता है। चुनौती पूरी होते–होते आखिर तक हाथ पर व्हेल की आकृति उभरती है। चुनौती में हाथ पर ब्लेड से एफ–57 उकेरकर फोटो भेजने को कहा जाता है। हॉरर वीडियो या फिल्म देखने के लिए चुनौती दी जाती है। हाथ की तीन नसों को काटकर उसकी फोटो क्यूरेटर को भेजना भी खेल में एक चुनौती है। ऊँची से ऊँची छत पर जाने को इस गेम में कहा जाता है। व्हेल बनने के लिए तैयार होने पर अपने पैर में "यस" उकेरना होता है। तैयार होने पर खुद को चाकू से कई बार काटकर सजा देना भी चैलेंज का हिस्सा है। सभी चुनौतियाँ पूरी करने वाले को खुदकुशी करनी पड़ती है।

दुनिया के कई देशों ने इसपर चिंता व्यक्त की है।

मदुरै के मन्नार कॉलेज में बीकॉम द्वितीय वर्ष में पढ़ने वाले 19 साल के विग्नेश ने कथित तौर पर खुदकुशी कर ली। उसका तमिल भाषा में एक नोट मिला जिसमें लिखा हुआ है कि ये बस खेल नहीं है, एक बार आप दाखिल होते हैं तो आप छोड़ नहीं सकते। मैं हर किसी से अपील करता हूं। कृपया यह खेल कभी न खेलें। देखिए हमारे परिवार का क्या हाल हुआ?

पुलिस का कहना है कि परिवारवालों ने विग्नेश को अलग–थलग पड़ते और इंटरनेट पर बहुत समय लगाते देखा था, मगर उन्हें संदेह नहीं हुआ। परिवार को सतर्क रहना चाहिए था कि वह क्यों मोबाइल पर इतनी देर खेलता है? परिवार का कहना है कि वह रात को 2 बजे तक मोबाइल चलाता रहता था।

खुद को खत्म करनेवाले खेल में बच्चों का फँसना दुःखद है। गेम का शिकार हो रहे बच्चों को लेकर बेहद सतर्क होने की जरूरत है। सूचना प्रसारण मंत्रालय से तकनीकी हल निकालने को कहा गया है। शिक्षकों और बच्चों को इसके बारे में समझाना और समझना बहुत जरूरी है। माता, पिता और शिक्षक सतर्क रहें। बच्चों की हर गतिविधि पर पैनी नजर रखें। बच्चों में ऐसा कोई लक्षण दिखे तो उनके माता–पिता से संपर्क करें।

चाइल्डलाइन 1098 पर भी ऐसी घटनाओं की जानकारी दे सकते हैं.

यह हुई इस खेल की सामान्य जानकारी। अब इसका विश्लेषण:

१. इस खेल का जनक भी मनोविज्ञान का विद्यार्थी है और रूस में पकड़ी गई एक अन्य खेल नियन्ता या गेम एडमिन भी। अर्थात् ये लोग चयन हेतु खिलाड़ी की अपने मनोवैज्ञानिक अध्ययन का उपयोग कर मानसिकता जाँचते हैं।

२. जैसा कि इस खेल के जनक ने पुलिस को बताया कि वे कमजोर मानसिकता वाले लोगों से आत्महत्या करवाकर समाज की **सफाई** करना चाहते हैं। अर्थात् मनोविज्ञान के सहारे कमजोर मानसिकता वाले या अवसादग्रस्त बच्चों का चयन इस खेल के लिए करते हैं और निर्दयतापूर्वक उन्हें मौत की राह पर ले जाते हैं।

३. वस्तुतः यह खेल नहीं होकर निर्देशों की श्रृंखला वाला जंजाल है जिसमें क्रमागत निर्देशों में पालनकर्ता बच्चों को हानि का स्तर बढ़ाते हुए उसे हीरो या कि नायक बताकर उसे और अधिक हानि के लिए मानसिक रूप से तैयार या उत्प्रेरित किया जाता है।

४. निर्देशों की पालना न करने पर मम्मी पापा को मारने की धमकी देने या सिस्टम हैक करने की धमकी का जहाँ तक प्रश्न है, इससे कमजोर मानसिकता और कमजोर चरित्र वाले बच्चों का भयभीत होना स्वाभाविक है।

५. बच्चों द्वारा प्रयुक्त सिस्टम (मोबाईल या क्रम्प्यूटर) में बच्चों द्वारा ऐसी सामग्री संग्रहीत हो सकती है, जो बच्चों द्वारा घर के सदस्यों से छुपायी जाती है। ऐसे बच्चों के आसान शिकार बनने की संभावना होती है।

६. बहुत से ऐसे सॉफ्टवेयर होते हैं, जिससे आपके सिस्टम का नियंत्रण दूर देश में बैठे व्यक्ति को भी दिया जा सकता है और आपके सामने ही वह आपके कम्प्यूटर का संचालन करता है। संभव है ब्लू व्हेल में यह दूरस्थ नियंत्रण की ऐसी एप्लीकेशन समाहित हो और यह खेल इंस्टाल रहने तक सिस्टम पर नियंत्रण खेल निर्देशक का ही रहे और बच्चा डिस्कनेक्ट करने में असमर्थ हो। ऐसे में गोपनीय सामग्री के सामने आने के भय से घबराकर हानिकारक निर्देशों की अनुपालना के अलावा और विकल्प उसके पास न हो।

७. इस घातक खेल से किसी भी प्रकार बच पाए बच्चों और इस खेल को जाँचने का प्रयास करने वाले लोगों के उपलब्ध अनुभवों के आधार पर इस खेल में बच्चों को मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों और योजनाओं के अनुसार रोमांचक, भयानक, घृणित और विकृत कृत्यों के चित्रों और दृश्य–श्रव्य माध्यमों के वातावरण में झोंक दिया जाता है, जिससे बच्चा भय, दुष्प्रेरणा या किसी एषणा के वशीभूत सम्मोहित सा हो चुनौतियों में दिए कार्य को अनायास या सायास करता जाता है।

८. इस भयानक खेल के जनक और ज्ञात एडमिन मनोवैज्ञानिक है और "योग्यतम ही जीवित रहेगा" (Survival of the Fittest या Natural Selection) के सिद्धान्त के अनुयायी है। जैसे कि एक घोंसले में पक्षी के बच्चों में से सक्षम बच्चा अक्षम को नीचे फैंक देता है। मानों बड़ी मछली छोटी को खा रही हो। कोई सह–अस्तित्व नहीं। डार्विन ने यह सिद्धान्त दिया था। यह जंगल न्याय है। सभ्य मानवीय समाज में मान्य नहीं हो सकता। यह शिक्षा शास्त्रियों के चिंतन का विषय है कि शिशु को गिनती सिखाते समय फूल और फलों के चित्र छापने से और उबले अण्डे, मुर्गमुसल्लम या तली मछलियाँ प्लेट में पड़ी दिखाने के क्या परिणाम हो सकते हैं। इस खेल में जंगली सिद्धान्तों के संस्कार के साथ मनोविज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग भयानक ही सिद्ध हुआ है। इससे ज्ञान–विज्ञान के साथ नैतिकता के समायोजन की अतीव आवश्यकता अनुभव होती है।

९. हमारे बच्चों में संस्कार, शूरता, निर्भयता, पारिवारिकता, सामाजिकता और राष्ट्रीयता विकसित करने पर विचार अवश्य करें। ये गुण 100 में से 100 अंक लाने की दौड़ में कहीं भी नहीं मिलते। महर्षि दयानंद वांग्मय, आर्यसमाज और आर्य वीर दल में ये गुण सुलभ है।

१0. दुनिया भर के सूचना तकनीक विषेशज्ञों, मनोवैज्ञानिकों, सोशियल वैबसाइटों के स्वामियों, सुरक्षा व पुलिस तंत्र तथा शिकार एवं सम्पर्क में आए बच्चों तथा उनके परिजनों को मिलकर इस खेल के अवषेशों से भी इण्टरनैट को मुक्त करना चाहिए। ज्ञात अपराधियों का रूसी होना और मनोविज्ञान के अध्येता होना बड़ा सूत्र हो सकता है।

११. ज्ञात अपराधियों का रूसी होना भारतीय बच्चों को धमकियों से निर्भय बनाने का एक अच्छा उपाय हो सकता है। इसलिए भारतीय माता–पिता, संरक्षक, शिक्षक व हितचिंतक सभी धमकियों से निर्भय रहने का बच्चों को संदेश देवें। स्पष्ट बतावें कि रूस में बैठे एडमिन कुछ नहीं कर सकते और तुम्हें किसी भी गलत बात के बदले एडमिन की धमकी में आने की जरूरत नहीं है। आत्महत्या से तो कोई भी गलती बहुत छोटी होती है।

<u>**हिन्दी दिवस के बहाने राष्ट्रभाषा की अवस्था पर चिंतनः**</u> भारत के संविधान के भाग १७ में अंग्रजी को १५ वर्ष तक शरण देते हुए देवनागरी लिपि में हिन्दी को (जिसे महर्षि ने आर्यभाषा का गरिमामय नाम दिया था।) राष्ट्रभाषा घोषित किया था। संविधान के अनुच्छेद ३५१ में संघ का यह कर्त्तव्य बताया है कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके...जहाँ आवश्यक हो वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए....। कहाँ है यह संस्कृतनिष्ठ हिन्दी।

इस बार हिन्दी दिवस मानते हुए गंभीरता से सोचें कि क्या हमारे घर के बच्चे उनहत्तर, उनासी और नव्वासी का अंतर जानते हैं। वे टेबल याद करते हैं या पहाड़े। दिनचर्या में परिवार में कितने शब्द संस्कृतनिष्ठ और कितने अन्य प्रयोग में आते हैं। कितने हिन्दी अखबार अंग्रेजी का स्तंभ देने लगे हैं।

राष्ट्रभाषा विजेता की होती है, संख्या की नहीं। जब भारत में अरबी फारसी शासन की भाषा थी तब भी हिन्दी ही सर्वाधिक व्यापक भाषा थी। जब अंग्रेजी शासन की भाषा बनी तब भी हिन्दी तो सर्वाधिक व्यापक भाषा थी ही, अरबी फारसी भी अंग्रजी से कम नहीं बोली जाती थी। जिन्होंने शासन किया, उन्होनें अपनी भाषा को शासन की भाषा बनाया। आज की शासन की भाषा से आप शासन का निर्णय करें। राज तो अंग्रेजों का ही है। कामदार काले अंग्रेज है, जो स्व–तंत्र नहीं जानते या जिन्हें स्व–तंत्रता से घृणा है। स्व–तंत्र से घृणा करने वालों के राज में स्वतंत्रता का आभास मानकर हम उनके तंत्र में अपने जीवन को अंग्रेजीमय करते चले जा रहे हैं।

इस हिन्दी दिवस को स्व–भाषा के माध्यम से स्वतंत्र होने का संकल्प लें। हिन्दी के शब्दों के जानते कम से कम विदेशी भाषा के शब्द तो काम में नहीं ही लेवें। नित्य संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के नए शब्द सीखने का संकल्प लें। बिना प्रीति के हिन्दी का यह पर्व मनाना निरर्थक है।

–कमल किशोर आर्य

आर्याभिविनय से

(द्वितीय प्रकाश)

दृते दृंः ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।३।। —यजुर्वेद ३६।१८

व्याख्यान— _हे अनन्तबल महावीर ईश्वर! ''दृते'' हे दुष्टस्वभावनाशक विदीर्णकर्म, अर्थात् विज्ञानादि शुभ गुणों का नाशक कर्म करने वाला मुझको मत रक्खो (स्थिर मत करो) किन्तु उससे मेरे आत्मादि को उठाके विद्या, सत्य, धर्मादि शुभगुणों में सदैव स्वकृपासामर्थ्य ही से स्थिर करो ''**दृंह मा**'' हे परमैश्वर्यवान् भगवन्! धर्मार्थकाममोक्षादि तथा विद्याविज्ञानादि दान से मुझको अत्यन्त बढ़ा ''**मित्रस्येत्यादि०**'' हे सर्वसुहृदीश्वर, सर्वान्तर्यामिन्! सब भूत =प्राणिमात्र मित्र की दृष्टि से यथावत् मुझको देखें, सब मेरे मित्र हो जाएँ, कोई मुझसे किञ्चिन्मात्र भी वैर-दृष्टि न करें। ''**मित्रस्याहं चेत्यादि**'' हे परमात्मन्! आपकी कृपा से मैं भी निर्वैर होके सब भूतप्राणी और अप्राणी-चराचर जगत् को मित्र की दृष्टि से स्वात्म, स्वप्राणवत् प्रिय जानूँ, अर्थात् ''**मित्रस्य, चक्षुषेत्यादि**'' पक्षपात छोड़के सब जीव-देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर वर्त्तमान करे।। अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्तें। इस परमधर्म का सब मनुष्यों के लिए परमात्मा ने उपदेश किया है, सबको यही मान्य होने योग्य है।।३।।

लेखकों से निवेदन

इस पत्रिका का उद्देश्य महर्षि मिशन को प्रचारित-प्रसारित करना हैं। आर्य जगत के चिंतकों और लेखकों से निवेदन है कि ऋषि मिशन की पूर्ति में सहयोग हेतु अपनी रचनाओं को प्रकाशनार्थ भिजवाएं। रचनाएँ महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के पते पर या sampadakmdsprakash@gmail.com **के पते पर ईमेल से भी भेजी जा सकती हैं।** **—संपादक**

ईश-आज्ञापालन

सहस्त्राक्षो विचर्षणिरग्नी रक्षांसि सेधति।

होता गृणीत उक्थ्यः।। —१।७९।१२

<u>**पदार्थः**</u>—हे विद्वन्! (**उक्थ्यः**) स्तुति करने योग्य (**सहस्त्राक्षः**) असंख्य नेत्रों की सामर्थ्य से युक्त (**विचर्षणिः**) साक्षात् देखने वाला (**होता**) अच्छे-अच्छे विद्या आदि पदार्थों को देने वाला (**अग्निः**) परमेश्वर (**रक्षांसि**) दुष्टकर्म वा दुष्टकर्मवाले प्राणियों को (**सेधति**) दूर करता और वेदों का (**गृणीते**) उपदेश करता है, वैसा तू हो।

<u>**भावार्थः**</u>— इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। परमेश्वर वा विद्वान् जिन कर्मों के करने की आज्ञा देवें उनको करो और जिनका निषेध करें, उनको छोड़ दो।

मलों को दूर कर, दर्शन होंगे

तद्विष्णोः परमं पदꣳसदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।।

—यजुर्वेद ६।५

<u>**पदार्थः**</u>— हे सभ्य जनों! जिस पूर्वोक्त (इस सूक्त के पूर्व मंत्रों में मनुष्य को उपदेश है कि वह दुष्टता त्याग परमात्मास और वेद को चित्त में स्थिर कर सत्य, विद्या, धर्म को दृढ़ करके प्रजा का पालन करता हुआ राजाओं का भी राजा बनो परमात्मा के उत्तम गुणों को दृढ़ता से देखो और धारण करो) कर्म से (**सूरयः**) स्तुति करने वाले वेदवेत्ता जन (**विष्णोः**) संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाले परमेश्वर के जिस (**परमम्**) अत्यन्त उत्तम (**पदम्**) प्राप्त होने योग्य पद को (**दिवि**) सूर्य के प्रकाश में (**आततम्**) व्याप्त (**चक्षुः**) नेत्र के (**इव**) समान (**सदा**) सब समय में (**पश्यन्ति**) देखते हैं, (**तत्**) उसको तुम लोग भी निरन्तर देखो।

<u>**भावार्थः**</u>— इस मन्त्र में पूर्व-मन्त्र से (**पश्यत**) इस पद का अनुवर्तन किया जाता है और पूर्णोपमालङ्कार है। निर्धूत, अर्थात् छूट गये हैं पाप जिनके, वे विद्वान् लोग अपनी विद्या के प्रकाश से जैसे ईश्वर के गुणों को देखकर सत्यधर्माचारयुक्त होते हैं, वैसे हम लोगों को भी होना चाहिए।

यज्ञानुष्ठान

आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम्।

इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम्।।६३।।– सामवेद

पदार्थः– परमात्मा उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! तुम (**पस्त्यानाम्**) घरों में (**इडः,पदे**) पृथिवी के ऊपर [**कुण्ड में**] (**गृहपतिम्**) घर के रक्षक [**अग्नि**] का (**नि,दधिध्वम्**) नितरां आधान करो, (**हविषा**) घृतादि से (**आ जुहोत**) सब ओर से होम करो, (**मर्जयध्वम्**) 'वेदी के इधर-उधर' मार्जन करो, (**रातहव्यम्**) जिसने हव्य दिया उस (**होताराम्**) होता नामक ऋत्विज् को (**नमसा**) नमस्कार आदि से (**सर्पयता**) सत्कृत करते हुए (**यजतम्**) यज्ञ करो।

भावार्थः– इस मन्त्र में मनुष्य को यह उपदेश है कि तुम घरों में पृथिवी पर अग्निकुण्ड में अग्न्याधान करो। घृतादि की आहुति दो। वेदी के समीप मार्जन (**शुद्धि**) करो। जिस होता आदि से यज्ञ-कार्य कराओ उसका नमस्कार वा अन्न आदि द्रव्यों से सत्कार करो। इस प्रकार स्त्री-पुरुष मिलकर यज्ञ करो। यज्ञ को अपने जीवन में उतरते हुए परमात्मा की उपासना करे; (संगतिकरण) सबको अपना समझते हुए सर्वभूतहितकारी बने।(देवपूजा) तथा (दान) अपने जीवन में होतृत्व की भावना को धारण कर तन,मन,धन को लोकहित में लगाने वाले बनें।

सत्य-भाषण

इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्।

सनेयमश्वं गामहमात्मानं तव पूरुषः।। –४।९।७ अथर्व.

पदार्थः– (**आञ्जन**) हे संसार को व्यक्त करनेवाले ब्रह्म! तेरे (**इदम्**) परमैश्वर्य को (**विद्वान्**) जानता हुआ मैं (**सत्यम्**) सत्य (**वक्ष्यामि**) बोलूँगा (**अनृतम्**) असत्य (**न**) नहीं। (**पुरुषः**) सबके अगुआ पुरुष परमेश्वर (**तव**) तेरे दिये हुए (**अश्वम्**) घोड़े, (**गाम्**) गौ वा भूमि और (**आत्मानम्**) आत्मबल का (**अहम्**) मैं (**सनेयम्**) सेवन करूँ। अथवा (अश्वम्) कर्मों में व्यापि वाली कर्मेन्द्रियों को (सनेयम्) प्राप्त करूं। (अहम्) मैं (गाम्) अर्थों की गमक ज्ञानेन्द्रियों को प्राप्त करूँ तथा (तव) आप परमेश्वर का ही होता हुआ मैं हे (पुरुष) ब्रह्माण्ड में व्यापक प्रभो! (आत्मानम्) अपने को - आत्मस्वरूप को प्राप्त करूँ, जानूँ।

भावार्थः–मनुष्य परमेश्वर की महिमा देखकर सदा सत्य ही बोले और पुरुषार्थपूर्वक सब पदार्थों से उपकार लेवे। ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों को उत्तम कार्यों में लगा अपने स्वरूप को पहचानें।

ब्रह्मणस्पति का परामर्श

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर् , मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा,
देवा ओकांसि चक्रिरे ।। —ऋग् १.४०.५

ऋषिः कण्वः घौरः। देवता ब्रह्मणस्पतिः। छन्दः बृहती।

• (ब्रह्मणस्पतिः) वेदज्ञान का अधिपति परमेश्वर तथा विद्वान् मनुष्य (**नूनं**) निश्चय ही [ऐसे] (**उक्थ्यम्**) प्रशंसनीय (**मन्त्रं**) परामर्श को (**प्र वदति**) प्रकृष्ट रूप से कहता है, (**यस्मिन्**) जिसमें (**इन्द्रः**) इन्द्र, (**वरुणः**) वरुण, (**मित्रः**) मित्र [और] (**अर्यमा**) अर्यमा (**देवाः**) देव (**ओकांसि**) घर (**चक्रिरे**) किये होते हैं।

• हे मनुष्य! जब कभी तुझे किसी विषय में परामर्श की आवश्यकता होती है, तब इधर-उधर मारा-मारा क्यों फिरता है? वे लोग जो स्वयं अज्ञानी और अपूर्ण हैं, भला तुझे क्या परामर्श देंगे? उनकी सलाह पाकर तो तू पथ-भ्रष्ट ही होगा। अतः जब कभी तेरे मन में कर्तव्याकर्तव्य का संशय उपस्थित हो, तब वेदज्ञान के अधिपति ब्रह्मणस्पति प्रभु की शरण में जा। अन्तर्मुख होकर सच्चे हृदय से अपनी समस्या उनके सम्मुख रख। वे अवश्य ही तेरे मन में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करेंगे और तेरे संशय या भ्रान्ति की सब काली घटाओं को छिन्न-भिन्न कर देंगे। अन्धकार में ज्योति पाने के लिए तू ब्रह्मणस्पति प्रभु के दिये हुए वेदों को भी देख सकता है कि उनमें क्या लिखा है, क्योंकि उनमें दिये हुए परामर्श भी ब्रह्मणस्पति के ही परामर्श हैं। इसके अतिरिक्त वेदों के ज्ञानी, अनुभवी, सदाचारी, मित्रभाव रखने वाले विद्वज्जन भी 'ब्रह्मणस्पति' हैं। यदि परमात्मा की प्रेरणा सुन सकने का सामर्थ्य तुझ में नहीं, तो तू उन विद्वानों की ही शरण में जा। उनसे अपने संशयों का निवारण करवा।

जो 'ब्रह्मणस्पति' है, उसके 'मन्त्र' या परामर्श में इन्द्र, वरुण, मित्र और अर्यमा देवों का निवास होता है। 'इन्द्र' ऐश्वर्य, उत्कर्ष, पराक्रम, विजय और सफलता को सूचित करता है। 'वरुण' पाप-निवारण का आदर्श है। 'मित्र' मैत्री और स्नेह का प्रतिनिधि है। 'अर्यमा' श्रेष्ठ एवं अश्रेष्ठों के साथ यथायोग्य व्यवहार एवं न्याय का देव है। ब्रह्मणस्पति के परामर्श में इन देवों के निवास का तात्पर्य है कि इन देवों से सूचित होने वाली उक्त विशेषताएँ उस परामर्श में निहित रहती हैं। उस परामर्श को पाकर और उनके अनुसार चलकर मनुष्य उत्कर्षवान् और विजयी होता है, पाप से बचता है, अन्य जनों के प्रति मैत्री और न्याय का बर्ताव करता है।

आओ, हम भी संशय की वेला में 'ब्रह्मणस्पति' प्रभु और 'ब्रह्मणस्पति' विद्वान् को ही अपना अन्तरंग बनाएँ, उसी से पूछें, उसी से प्रेरित हों और उसी के सन्देश का पालन करें। **—वेद मञ्जरी से**

आर्यसमाज का विस्तार

-पं.इन्द्र विद्यावाचस्पति

बम्बई, सयुक्तप्रान्त और पंजाब में आर्यसमाजों की स्थापना हो चुकी थी। आर्यसमाज के सभासद् हजारों की संख्या तक पहुँच चुके थे। जितने सभासद् थे, ऋषि दयानन्द के भक्त और अनुयायी उनसे कहीं अधिक थे। बहुत से लोग समझते थे-''यह सुधारक कहता तो ठीक है, परन्तु यह संन्यासी है, निर्भय है, निश्शंक है, हम इतना त्याग नहीं कर सकते, इस कारण सच्ची बात भी मुँह पर नहीं ला सकते। ऐसे लोग आर्यसमाजी न हो, परन्तु वे ऋषि के भक्त थे और उन्हें आर्यजाति का रक्षक समझते थे।

इस समय उत्तरी भारत में स्वामी जी की अपूर्व स्थिति थी। वे आर्य जाति (हिन्दू जाति) के नेता, सुधारक और रक्षक माने जाते थे। आर्य जाति का प्राण गौ जाति है। इस समय गो-रक्षा के लिए ऋषि दयानन्द से बढ़कर ऊँची आवाज उठाने वाला कोई नहीं था। ऋषि ने गोकरुणानिधि लिखकर आर्यजाति की आंखें खोलने का यत्न किया था। वे जिस किसी भी सरकारी अफसर से मिले, उसके सम्मुख भारत में गो-हत्या बन्द कराने पर जोर दिया। इतना ही नहीं, ऋषि के सिंहनाद से पहले ईसाई पादरी और मुसलमान मौलवी हिन्दू धर्म पर गहरी चोटें पहुँचा रहे थे। बेचारे हिन्दू पण्डित मूर्त्तियों और पुराणों के बोझ से दबे हुए होने के कारण अपनी पीठ भी सीधी न कर पाते थे, शत्रुओं के प्रहारों का क्या उत्तर देते? पादरी और मौलवी हिन्दू-क्षेत्रों में से खूब फसल काट रहे थे। ऋषि दयानन्द ने जहाँ एक ओर आर्य जाति की पीठ से पत्थर और पोथी का बोझ उठा कर उसकी कमर सीधी कर दी, वहाँ दूसरी ओर पादरियों और मौलवियों के तीरों को रोकने के लिए तर्क की ढाल खड़ी कर दी। ऋषि दयानन्द प्रतिभाशाली योद्धा थे। वे जानते थे कि जो आदमी किले की ओट से दुश्मन के वार को रोकता है, वह कभी दुश्मन को हरा नहीं सकता। दुश्मन की हिम्मत तोड़ने के लिए प्रत्याक्रमण भी चाहिए। पादरी और मौलवी पुराणों की कथाओं के हवाले दे देकर आर्य जाति को निरुत्तर कर रहे थे। पुराणों का त्याग करके मूर्त्ति-पूजा को वेद-विरुद्ध बतला कर ऋषि ने वे छिद्र बन्द कर दिए, जहां से होकर दुश्मन के गोले आर्यपुरी मे आ रहे थे। इस प्रकार घर की रक्षा का पूरा प्रबन्ध करके उस चतुर सेनानी ने अपने समालोचनारूपी अस्त्रों का मुंह बाहर की ओर मोड़ा और खुले मैदान में प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिए। ऋषि ने इंजील और कुरान हाथ में लिये और ईसाईयों और मुसलमानों को बताया कि तुम दूसरों की आंखों में तिनका ढूंढ़ने जा रहे हो, पहले अपनी आंख का शहतीर तो संभाल लो। ईसाइयों और मुसलमानों को कोमल-प्रकृति हिन्दू से कभी प्रत्याक्रमण की आशा न थी। वे हरिण से यह आशंका न करते थे कि यह प्रत्याक्रमण करेगा। पादरी और मौलवी इस आकस्मिक प्रत्याक्रमण से झुंझला उठे। उधर आर्य जाति का हृदय फूल उठा-आर्य धर्म और आर्य सभ्यता की रक्षा भी हो सकती है, आर्य वीरों के इतिहास का भी कोई रखवाला है, आर्यजाति भी अपने मान को बचा सकती है- इन विचारों से, आर्य पुरुषों का सांस प्रसन्नताभरी आशा से भर-पूर होकर जोर से चलने लगा। जो आर्यजन

ऋषि के कार्य के महत्व को समझ सकते थे, प्रसन्न थे कि परमात्मा ने आर्यजाति, आर्य धर्म और आर्य सभ्यता का रक्षक भेज दिया है। जो लोग ऋषि दयानन्द के खण्डनों को देखकर घबराते हैं, वे कभी उस स्थिति पर विचार नहीं करते, ज़िसमें ऋषि को काम करना पड़ा। स्थिति यह थी कि आर्य धर्म पर ईसाईयों और मुसलमानों के भयंकर आक्रमण हो रहे थे। उन्हें सफलता भी प्राप्त हो रही थी। सफलता के दो कारण थे- एक तो आर्यजाति में आई हुई बुराइयों के कारण घर की निर्बलता और दूसरा विरोधियों का निष्ठुरता से आक्रमण। ऋषि ने स्थति को पहचान कर ठीक उपाय का प्रयोग किया। घर में सुधार और आक्रमण करने वालों पर प्रत्याक्रमण-दो ही उपाय थे। वह स्थिति खतरे से भरी हुई थी, इस कारण धर्म के सेनापति की युद्ध के नियमों के अनुसार कठोर साधनों का प्रयोग करना पड़ा। इसमें अनुचित क्या था?

ऋषि दयानन्द उत्तरी भारत में आर्य जाति के मान्य नेता था। वे आर्यसमाजों के संस्थापक, गुरु और आचार्य थे। राजा और प्रजा की दृष्टि में वे भारत के अगुवाओं में से एक थे। यह स्थिति थी, जब वे पंजाब का दौरा लगा कर 1877ई. के जुलाई मास में संयुक्तप्रान्त में वापिस गए। लगभग दो वर्ष तक बराबर संयुक्त प्रान्त में ही भ्रमण करते रहे। इस दौरे में प्रचार हुआ, नये आर्यसमाजों की स्थापना हुई और मौलवियों तथा पादरियों से शास्त्रार्थ हुए। 29 जुलाई 1878 ई. को ऋषि दयानन्द रुड़की पहुँचे। वहां आपके व्याख्यानों में इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थी और प्रोफेसर लोग आया करते थे। उन लोगों के प्रश्न प्राय: विज्ञान के विषय पर होते थे। स्वामी जी ने एक दिन इसी विषय पर बातचीत की कि प्राचीन भारत में विज्ञान था या नहीं? आपने वेदों तथा अन्य आर्ष-ग्रन्थों के प्रमाण देकर बताया कि प्राय:सभी मुख्य-मुख्य वैज्ञानिक सिद्धान्त, जिन पर नये विज्ञान को गर्व है, हमारे साहित्य में विद्यमान हैं। रुड़की से अलीगढ़ होते हुए स्वामी जी अगस्त मास के अन्त में मेरठ पहुँचे। मेरठ के उत्साही आर्यपुरुषों के धर्मबल से यह समाज शीघ्र ही युक्तप्रान्त के समाजों में मुख्य हो गया। मेरठ से स्वामी जी दिल्ली पहुंचे। यहाँ भी प्रचार के अनन्तर आर्यसमाज की स्थापना हुई।

दिल्ली से चलकर स्वामी जी ने छह-सात महीनों तक बड़ी भाग-दौड का दौरा लगाया। अजमेर, नसीराबाद, जयपुर, रिवाड़ी, दिल्ली, मेरठ, हरिद्वार, देहरादून आदि में प्रचार और सुधार का कार्य करते हुए आप आर्यपुरुषों को नया जीवन प्रदान करते रहे। मई (1878) मास में आप मुरादाबाद पहुँचे। मुरादाबाद में भी मुन्शी इन्द्रमणि आदि भक्तों के आग्रह से स्वामी जी ने देर तक निवास किया। आपके व्याख्यानों का विषय धार्मिक होता था, परन्तु दृष्टि में धर्म इतना विस्तृत था कि मनुष्य जीवन से सम्बन्ध रखने वाला शायद ही कोई ऐसा विषय हो, जिस पर आप प्रकाश न डालते हों। परमात्मा और आत्मा पर गहरे विचार, साइंस की समस्यायें, विवाह आदि सामाजिक प्रश्न, देश की दशा, राजा के कर्त्तव्य आदि सभी विषयों पर ऋषि दयानन्द अपनी सम्मति प्रकाशित किया करते थे। आपका 'धर्म' बड़ा विस्तृत था। वह केवल 'ईश्वर-पूजा' तक परिमित नहीं था और न ही डर या नीति की दृष्टि से आप उस के बीच में लकीरें डालने को तैयार हो जाते थे। धर्म एक था, व्यापी था, सर्वतोगामी था, मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार में 'धर्म' के कुछ

वक्तव्य हैं, यह ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त था। आपके व्याख्यान और आपका प्रधान ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, यह प्रमाणित करते हैं कि धर्म को आप एक मजहब, ईमान या रिलीजन नहीं समझते थे, अपितु एक व्यापी नियम मानते थे। यही कारण था कि ऋषि ने आर्यावर्त के प्राचीन गौरव पर बीसियों व्याख्यान दिए, अनेक प्रार्थनाओं में आर्य जाति के चक्रवर्ती राज्य की प्रार्थना की और राजा तथा प्रजा का धर्म बताते हुए भारत के विदेशी शासन की कमियां दिखाई। मुरादाबाद में आपके व्याख्यानों के समय अन्य लोगों के साथ स्थानीय कलेक्टर मि. स्पेडिंग भी आया करते थे। उनके कहने पर एक दिन स्वामी जी ने राजधर्म पर व्याख्यान दिया। ऋषि ने वेदों तथा स्मृतियों के प्रमाणों से राजनीति के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए निर्भयता से राज्य के दोष दिखलाए। व्याख्यान घण्टों तक होता रहा। व्याख्यान के अन्त में कलेक्टर महाशय ने स्वामी जी का धन्यवाद किया और कहा – ''यदि राजा और प्रजा के सम्बन्धों की ऐसी ही स्थिति रहती तो जो राजविप्लव हो चुका है, वह कभी न होता।''

मुरादाबाद से चलकर बदायूँ ठहरते हुए स्वामी जी बरेली पहुँचे और वहाँ के रईस ला. लक्ष्मीनारायण की कोठी पर आसन जमाया। व्याख्यान आरम्भ हो गए। स्वामीजी व्याख्यान के स्थान पर ठीक समय से पूर्व ही पहुँच जाते थे और नियत समय पर व्याख्यान शुरू कर देते थे। व्याख्यान का स्थान उतारे से दूर था, इस कारण लाला लक्ष्मीनारायण की गाड़ी समय पर आ जाती थी और मंडप तक स्वामी जी को पहुँचा जाती थी। एक दिन स्वामी जी व्याख्यान मण्डप में नियत समय से पौन घण्टे पीछे पहुँचे। समय का व्यतिक्रम स्वामी जी के स्वभाव में नहीं था। उन्हें विलम्ब से पहुँचने का बड़ा दु:ख हुआ। व्याख्यान के प्रारम्भ में ही आपने कहा:-

''मैं तो समय पर समुद्यत था, परन्तु गाड़ी नहीं पहुँच सकी। अन्त में पैदल चलकर आ रहा था कि मार्ग में गाड़ी मिली। समय के व्यतिक्रम में मेरा दोष नहीं है, **किन्तु बच्चों के बच्चों का है।** बाल-विवाह की सन्तानों में ऐसी निर्बलता का होना आश्चर्य नहीं।''

व्याख्यानों मे सभी ऊँचे राज्याधिकारी आया करते थे। स्वामी जी बिना भय या लिहाज के सच्चे धर्म का प्रचार करते थे। बरेली में एक ऐसी घटना हुई, जिससे स्वामी जी के चरित्र का भली प्रकार चित्रण होता है। घटना का चरित-लेखकों ने रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न भाषाओं में वर्णन किया है। मैं यहां पर महात्मा मुन्शीराम जी का किया वर्णन उद्धृत करता हूँ। यह पं. लेखराम जी के लिखे जीवन चरित की भूमिका में दिया गया है। महात्मा जी व्याख्यान में वहाँ स्वयं उपस्थित थे, अत: उनका दिया हुआ विवरण अधिक यथार्थ है:-

''एक रोज व्याख्यान देते हुए श्री स्वामी जी महाराज पुराणों की असम्भव बातों का खण्डन करते-करते उनकी सदाचार-शिक्षा की चर्चा करने लगे। उस समय पादरी स्काट, मिस्टर रेड कलेक्टर जिला और मि. एडवर्ड साहब कमिश्नर डिवीजन पन्द्रह-बीस अंग्रेजों के साथ विद्यमान थे। स्वामी जी ने पुराणों की पंचकुमारियों की चर्चा करते हुए एक-एक के गुण बयान करने आरम्भ किए और पौराणिकों की

बुद्धि पर शोक प्रकाशित किया कि द्रौपदी के पांच पति कराके उसे कुमारी करार दिया। यह भी कहा कि कुन्ती, तारा, मन्दोदरी आदि को कुमारी कहना पौराणिकों की आचार-सम्बन्धिनी शिक्षा को निकम्मा सिद्ध करता है। स्वामी जी की कथन-शैली ऐसी परिहासपूर्ण थी कि श्रोता उठने का नाम नहीं लेते थे। इस पर कलेक्टर और कमिश्नर साहब आदि हँसते और प्रसन्नता प्रकाशित करते थे। किन्तु इस विषय को समाप्त करके स्वामी जी महाराज बोले:—

''पुरानियों की तो यह लीला है, अब किरानियों की लीला सुनो। यह ऐसे भ्रष्ट है कि कुमारी के बेटे पैदा होना बताते, फिर दोष सर्वज्ञ शुद्ध स्वरूप परमात्मा पर लगाते और ऐसा घोर पाप करते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते।'' इतना कहना ही था कि कलक्टर साहब और कमिश्नर साहब के चेहरे मारे गुस्से के लाल हो गए, लेकिन स्वामी जी का व्याख्यान उसी जोर से जारी रहा। उस रोज ईसाई मत का खण्डन व्याख्यान की समाप्ति तक करते रहे। दूसरे रोज सुबह को ही खजांची लक्ष्मीनारायण की साहब कमिश्नर बहादुर की कोठी पर तलबी हुई। साहब बहादुर ने फरमाया कि अपने पण्डित साहब को कह दो कि बहुत सख्ती से काम न लिया करें। हम ईसाई लोग तो सभ्य हैं। हम तो बहस-मुबाहिसा में सख्ती से नहीं घबराते, लेकिन अगर जाहिल हिन्दू और मुसलमान बिगड़ गए तो तुम्हारे स्वामी पण्डित के व्याख्यान बन्द हो जाऐंगे। खजांची साहब यह पैगाम स्वामी जी के पास पहुँचाने का वायदा करके बाहर चले आये। लेकिन स्वामी जी तक यह मजमून पहुँचाने वाला बहादुर कहाँ से मिलता? कई एक ड्योढ़ी-बरदारों से प्रार्थना की, लेकिन कोई भी आगे बढ़ने की हिम्मत न कर सका। अन्त में चिट्ठी एक नास्तिक पर पड़ी और उसका जिम्मा ठहरवाया गया, कि वह मामला पेश कर देवे। खजांची साहब मय उस नास्तिक और चन्द दीगर आदमियों के कमरे में पहुंचे। जिस पर नास्तिक ने सिर्फ यह कहकर कि खजांची साहब कुछ अर्ज करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें कमिश्नर साहब ने बुलवाया था। किनारा किया और कुल मुसीबत खजांची साहब पर टूट पड़ी। अब खजांची साहब कहीं सिर खुजलाते हैं, कही गला साफा करते हैं। आखिर पाँच मिनट तक विस्मय से देख कर स्वामी जी ने फरमाया ''भाई तुम्हारा तो कोई काम करने का समय ही नहीं है, इसलिए तुम समय की कीमत नहीं समझ सकते। मेरा समय अमोल है, जो कुछ कहना हो , कह दो।''

इस पर खजांची साहब बोले-''महाराज, अगर सख्ती न की जाये तो क्या हर्ज है? इससे असर भी अच्छा पड़ता है और अंग्रेजों को नाराज करना भी अच्छा नहीं है, इत्यादि।'' ये बाते अटक कर और बड़ी मुश्किल से खजांची साहब के मुंह से निकलीं। इस पर महाराज हँसे और फरमाया - ''अरे बात क्या थी, जिसके लिये गिड़गिड़ाता है और हमारा इतना समय खराब किया, साहब ने कहा होगा, तुम्हारा पण्डित सख्त बोलता है , व्याख्यान बन्द हो जायेंगे, यह होगा, वह होगा। अरे भाई, मैं हौआ तो नहीं कि तुझे खा लूंगा। उसने तुझसे कहा, तू मुझसे सीधा कह देता। व्यर्थ इतना समय क्यों गंवाया।''

एक विश्वासी पौराणिक हिन्दू बैठा था बोला- देखा, यह तो कोई अवतार हैं, दिल की बात जान लेते हैं।

''खैर, यहां तो जो कुछ हुआ सो हुआ। अब व्याख्यान का हाल काबिले जिक्र है। मैंने केशवचन्द्र सेन, लाल मोहन घोष, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एनी बेसेन्ट और अन्य बहुत से प्रसिद्ध व्याख्याताओं के भाषण सुने हैं, और वह भी उनकी बढ़ती के समय में। लेकिन मैं सच्चे दिल से कहता हूं कि जो असर मुझ पर उस रोज के व्याख्यान ने किया और जो फसाहत मुझे उस रोज के सादे शब्दों में मालूम हुई, वह अब तक तो दिखाई नहीं दी। आगे की ईश्वर जाने। उस रोज आत्मा के स्वरूप पर व्याख्यान था। इसी प्रकरण में महाराज ने सत्य के बल पर बोलना प्रारम्भ किया। पादरी स्काट को छोड़कर पहले दिन के सब अंग्रेज सज्जन विद्यमान थे। कोई आदमी नहीं हिलता था। सब चुचचाप एकाग्र होकर व्याख्यान सुन रहे थे। मुझे पूरा व्याख्यान तो याद नहीं, यद्यपि उसके असर का अब तक अनुभव करता हूँ, किन्तु कुछेक शब्द मुझे मरते दम तक याद रहेंगे। ऋषि ने कहा-'' लोग कहते है कि सत्य को प्रगट न करो। कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे, चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।'' इसके बाद उस उपनिषद् वाक्य को पढ़कर जिसमें लिखा है कि आत्मा को न कोई हथियाद छेद सकता है और न उसे आग जला सकती है, गरजती हुई आवाज में बोले-''यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे।''

फिर चारों ओर अपनी तीक्ष्ण आंखों की ज्योति डालकर सिंहनाद करते हुए फरमाया-''लेकिन वह सूरमा वीर पुरुष मुझे दिखलाओं जो यह दावा करता है कि वह मेरी आत्मा का नाश कर सकता है। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखाई नहीं देता, मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं हूं कि मैं सत्य को दबाऊंगा या नहीं।''

लम्बे उद्धरण के लिए पाठक क्षमा करें। यह ऋषि दयानन्द की व्याख्यान शक्ति और निर्भयता का एक अच्छा दृष्टान्त हैं। जिन लोगों को ऋषि के व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उस पर व्याख्यानों का बड़ा गहरा प्रभाव होता था। ऋषि की भाषण-शक्ति स्वाभाविक थी, उसमें बनावट या यत्नपूर्वक भाषा-निर्माण का नाम नहीं था। जो कुछ था, हृदय का शब्द था, एक निर्भय आत्मा का उद्‌गार था। यही कारण था कि ऋषि का भाषण सदा नया, सदा मनोरंजक और सदा शिक्षाप्रद होता था।

ऋषि पूरी तरह निर्भय थे। उनके जीवन की घटनाएँ निर्विवाद रीति से सिद्ध करती हैं कि किसी शारीरिक या मानसिक खतरे से घबराना उनके लिए असम्भव था। भय, यह शब्द उनके शब्दशास्त्र से निर्वासित हो गया था।

बरेली में ऋषि दयानन्द का पादरी स्काट से शास्त्रार्थ हुआ था। शास्त्रार्थ बड़ी शान्ति से हुआ। जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा। शास्त्रार्थ में आप बड़ी स्पष्टवादिता से काम लेते थे, परन्तु कभी प्रस्तुत विषय, सभ्यता की सीमा और सत्यप्रियता का साथ नहीं छोड़ते थे। प्रतिपक्षी के पक्ष को समझना, समझ कर उसे ठीक रूप से प्रकट करना और युक्तिपूर्वक उत्तर देना, यह शास्त्रार्थ के स्वर्णिम नियम ऋषि दयानन्द को मान्य थे। केवल शब्दों से ही मान्य नहीं थे, व्यवहार में भी मान्य थे।

बरेली के पीछे कई मास तक संयुक्त प्रान्त का भ्रमण जारी रहा। शाहजहाँपुर, लखनऊ, फर्रुखाबाद, कानपुर, इलाहाबाद और मेरठ आदि नगरों में ऋषि धर्म का प्रचार करते रहे। जहाँ आर्यसमाज नहीं बने थे, वहाँ उनकी स्थापना कर देते और जहाँ समाज की स्थापना हो चुकी थी, वहाँ उसके पुष्ट करने का उद्योग करते थे। धर्म–चर्चा का समारोह भी सभी जगह होता रहा। मेरठ से देहरादून और वहाँ से फिर मेरठ होते हुए स्वामी जी आगरा पहुँचे। आगरा संयुक्तप्रान्त का अन्तिम नगर था, जिसमें ऋषि दयानन्द ने धर्म–प्रचार करके आर्यसमाज की स्थापना की। आगरा से संयुक्तप्रान्त से विदाई लेकर ऋषि राजपूताना की ओर प्रस्थित हुए।

(अन्तिम कवर पृष्ट का शेष)

विशेष सूचनाः इन पॉच दिवसों में श्री कमलेशजी कर्मठ जटिल से जटिल रोगों का निदान नाड़ी–परीक्षण से करने हेतु निःशुल्क सेवाएँ प्रदान करेंगे।

नोटः सुविधा एवं आवश्यकतानुसार नियत विद्वानों /वक्ताओं में बदलाव किया जा सकता है।

कार्यक्रम स्थल रेलवे स्टेशन के पिछले द्वार से होकर, ओल्ड कैम्पस मोहनपुरा पुलिया के पास है। अतः रेल से आने वाले आगन्तुकों से निवेदन है कि रेलवे स्टेशन के पिछले द्वार से पधारें।

विशेषः इस प्रकार के सभी कार्यक्रम जन सहयोग से सम्पन्न होते हैं। कृपया मुक्त हस्त से दान देवें। दान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर के नाम से देवें। न्यास को दिया गया दान आयकर की धारा ८0 जी के तहत छूट प्राप्त है। बैंक ऑफ बड़ौदा, जोधपुर मुख्य शाखा में हमारा खाता संख्या 0१३६0१000२८६४६ तथा आईएफएससी BARB0JODHPU है। जिसमें पॉचवॉ अक्षर भून्य है

जोधपुर आर्यजनों के लिए बस सुविधा प्रातः 7 बजे मगरा पूंजला से भदवासिया, पावटा "सी" रोड़ होते हुए दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास पहुँचेगी। समय का विशेष ध्यान रखें।

सम्पर्कसूत्र

दुर्गादास वैदिक 9929382335
पदमसिंह आर्य 9461088811
विमल शास्त्री 9828585871

आर्य किशनलाल गहलोत
९८२९०२७४८१

न्यास कार्यालयः 0291–2516655

आर्य जयसिंहपालड़ी
9829027460
सेवारामजी आर्य
8946981888

विनित : महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के सभी न्यासी एवं जोधपुर के सभी आर्यजन

हिमाचल के राजभवन में दो दिन

25 मई 2017 को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्रीयुत आचार्य देवव्रत जी से मिलने के लिए शिमला के राजभवन में पहुँचा। यह राजभवन लगभग 175 वर्ष पूर्व तत्कालीन अंग्रेज ने अपने आवास के लिए बनाया था। इसमें दर्जनों कमरे हैं जो अत्याधुनिक, सभी सुविधाओं से युक्त है। इसमें 100 के लगभग सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी हैं, जो राजभवन में आने वाले अतिथियों-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपालों तथा अन्य विभिन्न विभागों के मंत्रियों अधिकारियों के आवास, भोजन आदि सभी प्रकार की सुविधाओं का पूरा-पूरा प्रबन्ध करते हैं।

जैसा कि मैं पढ़ता व सुनता आया था कि राष्ट्रपति की तरह राज्यपाल भी एक सफेद हाथी की तरह या रबर स्टैम्प की तरह एक फालतू (अनावश्यक एम.एल.ए. मंत्रियों की) पदवी है जो मात्र हस्ताक्षर करने, प्रतिज्ञा दिलवाने, सभाओं में उपस्थित होने तक के ही काम के होते हैं। अपनी ओर से राजकार्यों में कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं कर सकता है न कोई योजना/कानून विशेष बना सकता है। निष्क्रिय, अकर्मण्य व्यक्ति होता है, जिस पर करोड़ों रुपये व्यय होते हैं। किन्तु दो दिनों में कुछ घण्टों की चर्चा, विचार विमर्श, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से जो जो बाते सामने आयीं, उनको सुनकर मैं तो स्तब्ध/आश्चर्य चकित हो गया। उनकी कुछ बातों को जन सामान्य के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिन्हें पढ़कर, सुनकर वे हर्षित होंगे, उत्साह व प्रेरणा मिलेगी।

आचार्य देवव्रत जी ने राजभवन में आते ही राज्य के समस्त उच्चाधिकारियों से परिचय प्राप्त करने, उनके कार्य विभाग, उनके दायित्व, अधिकार, समस्याएं व प्रश्नोत्तर आदि से सम्बन्धित एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक से आचार्य जी को सहसा ही अधिकारियों की योग्यता, मानसिकता, भावनाओं से सम्बन्धित जानकारी मिल गयी। जैसा कि राजनीति में होता है, विरोधियों ने, विपक्षियों ने इस बैठक की प्रतिक्रिया में कपोल-कल्पित, मनगढ़न्त, मिथ्या धारणाएँ बनाकर समाचार पत्रों में प्रकाशित करा दी। किन्तु बैठक में विद्यमान बुद्धिमानों, निष्पक्ष अधिकारियों तथा समाज के प्रतिष्ठित सज्जनों ने इन विरोधियों के विरोध में आवाज उठाई तथा आचार्य की प्रशंसा की और धन्यवाद भी प्रकट किया।

राजभवन मे आते ही एक महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया कि अंग्रेजों के काल से चली आ रही शराब, मांस की पार्टी वाले भवन को उखाड़कर वहाँ पर एक सुन्दर, आकर्षक यज्ञशाला का निर्माण कराया। उसके उद्घाटन के कार्यक्रम में भूतपूर्व तथा वर्तमान मुख्यमंत्रियों, विधानसभाओं के सदस्यों, मंत्रियों तथा अन्य समस्त राज्य के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया और उन्हें यजमान बनाया। वेदमंत्रों के शुद्ध पाठ द्वारा यज्ञ कराया तथा भजनोपदेशकों से भजन भी कराए। इसका राज्य की जनता पर इतना अद्भुत प्रभाव पड़ा कि आचार्य जी उनके लिए श्रद्धास्पद बन गये।

विरोधियों,स्वार्थियों, अज्ञानियों ने इसका भी विरोध किया कि राजभवन में यज्ञशाला बनाना अनुचित है, यह धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध है तो उनको उत्तर दिया गया कि जब राष्ट्रपति भवन में मस्जिद, गुरुद्वारा बन सकता है तो राजभवन में यज्ञशाला क्यों नहीं बन सकती ? इस तर्क से भी विरोधी निरुत्तर हो गये। आचार्य जी को जब भी खाली समय मिलता वे गाड़ी में फावड़ा, तसला, झाडू बाल्टियाँ लेकर निकटस्थ गावों में कर्मचारियों के साथ चले जाते और सफाई अभियान शुरू कर देते। गाँव, नगर की जनता और वहां के राज्य कर्मचारी भी आकर राज्यपाल जी के साथ सफाई कार्य में लग जाते। इसका भी जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा वहाँ सर्वत्र उनकी स्तुति, प्रशंसा होने लगी, और आदर भाव भी होने लगा।

गुरुकुलीय शिक्षा से निर्मित, वैदिक विद्वान् निष्क्रिय, अकर्मण्य रहने वाले नहीं होते हैं। वे कुछ न कुछ समाज, गाँव, नगर, राज्य के लिए कार्य करते ही रहते हैं। आचार्य जी ने गाँवों का भ्रमण प्रारम्भ किया। गाँव वालों से समस्या सुनी और स्वयं भी अनुभव किया कि पर्याप्त वर्षा वाला प्रदेश होते हुए भी पानी सारा नीचे मैदानों में बह जाता है, गाँव में खेती के लिए पानी नहीं बचता है, न पीने के लिए। अत: आपने गाँव वालों को सुझाव दिया कि जहाँ पर गाँव के आस पास नीची भूमि है और वहां पर पानी एकत्रित करने के लिए चक डेम बनाये जायें जिससे सिंचाई के लिए पानी मिलेगा, पानी का स्तर ऊपर होगा और पीने के लिए भी पानी उपलब्ध होगा।

गाँवों में भ्रमण करते हुए लोगों को घरों के आगे, पीछे फैक्ट्रियों के खाली स्थानों, पर्वतों पर वृक्ष लगाने की भी प्रेरणा देते हैं कम से कम एक वर्ष में एक व्यक्ति एक-एक वृक्ष लगाये तो अनायास ही लाखों, करोड़ों वृक्ष लग जायेंगे। गाँव के लोगों को पुत्री उत्पन्न होने पर घर में गीत गाने, समारोह मनाने तथा गाँव भर में मण्डली बनाकर वाद्ययन्त्रों के साथ गीत भजन गाते हुए खुशी का प्रदर्शन करेंगे, जिससे बेटियों के प्रति श्रद्धा, प्रेम बढ़ेगा- ऐसा सन्देश देते हैं। फैक्ट्री के स्वामियों को, दुकानों के मालिकों को फैक्ट्री के आसपास साफ-सफाई रखने, कूड़ा कचरा हटाने, वहाँ पर कचरा पेटी रखने का भी संकेत करते है, उनको बताते हैं कि सफाई होने से सुन्दरता बढ़ेगी, रोग भी समाप्त होंगे, अन्यों को भी प्रेरणा मिलेगी।

राजभवन में यदा कदा देश भर के राज्यों के पदाधिकारी, राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि तथा राष्ट्रपति आदि भी अतिथि के रूप में आकर निवास करते हैं, और राजभवन में शराब, मांस-मछली आदि की मांग भोजन के रूप में करते हैं। मुझे सुखद आश्चर्य लगा कि सभी को यहाँ तक कि राष्ट्रपति जी को भी मांस-मछली परोसने हेतु स्पष्ट मना करके दिया, बाहर से मंगवाकर खाने की प्रार्थना को भी कठोर शब्दों में निषेध कर दिया कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा। ''मेरे लिए धर्म, संस्कृति की गरिमा बनाये रखना महत्त्वपूर्ण है, राज्यपाल का पद कोई महत्त्व नहीं रखता है''। यह एक साहस, निर्भीकता व आत्मबल का ही परिचायक है।

हिमाचल के राज्यपाल को देखकर देश के राज्यपालों के प्रति मेरी जो धारणा बनी हुई थी वह समाप्त हो गई कि ये ''मिट्टी के माधो'' होते है, ''Show piece'' होते हैं। किन्तु आचार्य जी तो किसी अन्य मिट्टी के बने हैं, उनके मन-बुद्धि, विचारों का निर्माण करने वाले चाहे माता-पिता हों या आचार्यगण वे उच्च प्रकृति वाले आदर्श व्यक्ति थे। उनकी आत्मा ऋषियों के दिव्य सन्देशों, सिद्धान्तों, विधि-विधानों, नियमों से रंगी हुई है। वे परिस्थितियों के दास बनकर, उनसे तुच्छ स्वार्थों के लिए समझौता करने वालों में से नहीं हैं। वे अज्ञानी, स्वार्थी, अभिमानी, अधर्मी, पापी व्यक्तियों के आगे झुकने वालों में से नहीं है। उनके लिए धर्म, सत्य, न्याय, आदर्श महत्त्वपूर्ण हैं; धन, सत्ता, प्रतिष्ठा, सम्मान तुच्छ है। ऐसे दिव्य गुणों, भावनाओं, संस्कारों, कर्मों से युक्त आचार्य पर हमें गर्व है। हम उनकी प्रगति और उन्नत भविष्य की कामना करते हैं। जिससे समाज राष्ट्र में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो सके।

आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्य
वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व स्वतंत्रता दिवस मनाया

भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी संवत २०७४ विक्रमी मंगलवार दिनांक १५ अगस्त २०१७ को द्वापर युग शिरोमणि योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और भारत के स्वतंत्रता दिवस के दुर्लभ अवसर पर नगर आर्य समाज गुलाबसागर, जोधपुर में आयोजित उत्सव के आरम्भ में विशेष यज्ञ में दोनों उत्सवों के अनुसार विशेष आहुतियाँ दी गईं।

यज्ञोपरांत समाज भवन की छत पर समाज के वयोवृद्ध सदस्यों मंत्रीवर बुद्धिप्रकाश जी आर्य एवं उपप्रधान वीरेन्द्र कुमार जी शर्मा द्वारा विशाल राष्ट्रीय ध्वज को ध्वजदण्ड पर लगाया गया। पश्चात् सुहावने मौसम में ध्वजस्थान पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का आरोहण किया गया। पश्चात सबने राष्ट्रगान गया।

ध्वजारोहण के पश्चात् सत्संग में कमल किशोर आर्य द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। माता शान्तिदेवी जी ने भी भारत का यशोगान किया। भुवनेश आर्य ने "ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी" प्रस्तुत किया। शोधार्थी श्री कपिलदेव जी ने भारत की परतंत्रता और स्वातंत्र्य समर पर श्रीकृष्ण, महर्षि दयानंद और आर्यसमाज के परिप्रेक्ष्य में विचार व्यक्त करते हुए भारत को उन्हीं के बताए मार्ग पर चलाने की आवश्यकता बताई। समाज के मंत्रीवर श्री बुद्धिप्रकाशजी आर्य ने वैदिक राष्ट्रप्रार्थना एवं उसका हिन्दी काव्यानुवाद गाया।

सुख-दुःख की समस्या

(वैदिक दर्शन : षष्ठम पुष्प)

-चमुपतिजी एम.ए.

प्रचारक बालकः-

जो सबको आश्चर्य में डालते हैं, वे प्रचारक बालक हैं।

न्यूटन हेस्टिंग्स (Newton Hastings) नामक एक सात वर्ष का बालक है जो अपने प्रचार द्वारा मनुष्यों को स्तम्भित और चकित कर देता है। वह अपने निवास-स्थान सलसबरी से सारे राज्य में भ्रमण करता है और जब भी यह विज्ञापन दे दिया जाता है कि उसका उपदेश होगा तो वह गिरजा अवश्य भर जाता है। उससे हाथ मिलाने की प्रतिक्षा में लोगों की भीड़ बाहर खड़ी रहती है। वह स्कूल की द्वितीय श्रेणी में है और अभी लिखना-पढ़ना सीखने लगा है, इसलिए अपने उपदेशों को वह तैयार नहीं कर सकता । उसका बाप उन सुधरे हुए मनुष्यों में से एक है जिन पर उसके उपदेशों का प्रभाव पड़ा है। जब उसने अपने पुत्र की प्रतिभा-शक्ति को देखा तो वह गिरजे में भर्त्ती हो गया और श्रद्धा से वहाँ सेवा करता है।

दुःखवादः-

हमने पहले निर्देश किया है कि ऐहिक सुख में भी दुःख की लाग पाई जाती है। निराशावादी इस सिद्धान्त को अति की सीमा तक ले जाते हैं। कुछ समय से बौद्ध धर्म के विषय में यह कल्पना प्रचलित थी कि यह धर्म-निरपेक्ष दुःखवादी है, इसका ध्येय अभाव की प्राप्ति है। वर्तमान खोज ने इस धारणा को निर्मूल कर दिया है। आत्म-हत्या ऐहिक दुःखों का एकमात्र उपाय है- यह प्रस्ताव प्रसिद्ध जर्मन विचारक शोपन हावर का है। परन्तु उसने स्वयं आत्म-हत्या नहीं की, किन्तु समय आने पर ही मरा। यह उसके मत का उसके अपने जीवन से प्रत्यक्ष खण्डन है।

वेद ने आत्महत्यारे को महापापी कहा है-

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

—यजुः० ४०।३

घोर अन्धकार से घिरी हुई अदैव अवस्थाएँ ऐसी हैं जहाँ आत्महत्यारे मरकर भी जाते हैं।

संयमः-

यदि मर जाना अभाव को प्राप्त हो जाना होता तो शोपन हावर के कथन में कुछ सत्य की मात्रा होती। अभाव की अवस्था में सुख न सही, दुःखी भी तो न होता। परन्तु यह तो आत्म-सत्ता ही बता रही है कि मरने पर आत्मा नहीं मर जाता। शोपन हावर को उसका अन्तरात्मा बता रहा था कि तू अमर है। तभी तो

उसने आत्म-हत्या नहीं की। आत्म-हत्या भीरुओं का मार्ग है और भीरुता स्वयं दु:ख है।

ऐहिक सुख, जिस प्रकार साधारण जनता उसे भोगती है, दु:ख से शून्य नहीं। इसकी भंगुरता दु:ख है। ऐन्द्रिय-सुख को स्थिर रखने का कोई साधन नहीं। खाते जाओ, पीते जाओ, कोई भोग निरन्तर भोगते जाओ, वही स्वयं रोग बन जाता है। भोग का आनन्द कभी-कभी लिया जाता है, निरन्तर नहीं। सुख कभी-कभी लिया जा सकता है, निरन्तर नहीं। सुख कभी-कभी में है अर्थात् संयमपूर्वक भोगने में। संयम इन्द्रिय-जन्य नहीं, आत्मा-जन्य है। यह तो हुई संसार के भोगों की अवस्था कि वे भी बिना वशीकार के वश में नहीं आते। फिर आत्मरति का तो कहना ही क्या है! सुकरात को विष के प्याले से ग्लानि नहीं होती। प्रभु ईसा सूली पर परमात्मा की इच्छा की पूर्ति चाहते हैं। दयानन्द फफोलों-भरे शरीर में प्रसन्नवदन रहते हैं और जब इस भोग की समाप्ति होती है तो वही महात्मा ईसा के शब्द दोहरा देते हैं। संसारी लोग ग़म ग़लत करने को मादक द्रव्यों का आश्रय लेते हैं। कुछ समय के लिए इनसे मस्ती आ जाती है; परन्तु उस मस्ती का उतार कठोर यातना होता है। आत्मज्ञानी 'नाम खुमारी' में मस्त रहता है। उसके अन्तर्हृदय में बोध उत्पन्न हो जातो है कि मैं शरीर नहीं। सांसारिक द्वन्द्व 'मात्रास्पर्श' देह-मात्र को छू जाने वाले हैं।

इन्द्रायेन्दो परिस्रव। —ऋ० ९।११४।१

इन्द्रियों के अधिपति के लिए आत्म-ज्ञान की गंगा बहती हैं।

जीवन्मुक्त:-

योगी संसार के कार्य से विमुख नहीं होता। आपत्तियों में आता है, झंझटों में पड़ता है, क्योंकि यह तो देह-धर्म है। शरीर-यात्रा में कर्म करना आवश्यक है। साधारण जनों में और योगी महात्मा में भेद यह होता है कि भोगी केवल इन्द्रियों के ही सुख-दु:ख का अनुभव करते हैं जो चिरस्थायी नहीं, और योगी को स्थिर सुख की निरन्तर अनुभूति होती रहती है। उस अनुभूति का प्रभाव इतना होता है कि ऐहिक सुख-दु:खों का उसमें लोप हो जाता है। ऐहिक सुखों में भी सुखपना उसी योग के साधन 'संयम' से आता हैं **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:।** (यजु०४०।१) इसलिये तू त्यागपूर्वक भोग कर।

यह त्याग अर्थात् आत्म-वशीकार का भाव अध्यात्म-जगत् की उपज है, अनात्मा की नहीं।

वेद ने आत्म-हत्या को पाप और उसका परिणाम राक्षसी भाव ठहराकर दु:ख से बचने का उपाय बताया है- **ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।** (अ.) ब्रह्मचर्य के तप से देव-स्वभाव मनुष्यों ने मृत्यु का हनन कर दिया है।

यही सुख-दु:ख की समस्या का समाधान है। जब जीते-जी मनुष्य इस प्रकार मृत्यु को मार लेता है तो मरने पर उसका अमृत होना स्वाभाविक हो जाता है। **य इन्दो: पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत्। तमाहु: सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रोयेन्दो** परि स्रव।। —ऋ० ९।११४।१

जिसने पवित्र करने वाले आत्म-ज्ञान के साधनों का अनुष्ठान किया, हे आत्मरति! जिसने मन को

तेरे अर्पण किया, उसका जन्म सफल हुआ। हे आत्मसुख की गंगा! उस आत्मवशीकर्ता के चारों ओर बह।

सार

वास्तविक सत्ता:-

मानसिक चिकित्सावाद वालों का मत है कि दु:ख की कोई सत्ता नहीं। केवल अपने भ्रम से मनुष्य दु:ख की सृष्टि करते हैं। निराशावादी संसार को दुख-ही-दु:ख का हेतु मानते हैं। यह दोनों की भूल है। तर्क भ्रम-मात्र सत्ता को भी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकता। दु:खवादी शोपन हावर को आत्म-हत्या का साहस नहीं हुआ। उसका जीवन उसके मत का खण्डन था।

तारतम्य:-

लोगों की आयु समान नहीं, सन्तति समान नहीं, सम्पत्ति समान नहीं, स्वास्थ्य में भेद है, मानसिक योग्यताओं का भेद है। यह भी नहीं कि एक अङ्ग की कमी दूसरे अङ्ग की अधिकता से पूरी हो जाए। व्यक्तियों के भोग में वस्तुत: तारतम्य है। यही तारतम्य सुख-दु:ख की पहेली हैं।

कर्म का फल:-

यह तारतम्य कहाँ से आता है? प्रकृतिवादी कह सकता है- परिस्थिति-भेद से। परन्तु परिस्थिति-भेद क्यों होता है? आत्मवादी आत्मा को प्रकृति का खिलौना नहीं बना सकता। परमात्मा की इच्छा-मात्र को इस तारतम्य का कारण मानना परमात्मा को या पक्षपाती मानना है या केवल तरंगी, और यह किसी धर्मवादी को अभीष्ट नहीं। धीर पुरुष अपने सुख-दु:ख का उत्तरदातृव्य अपने ही ऊपर डालेंगे, अर्थात् इसे जीव के कर्मों का फल ही ठहराएँगे। वेद आत्मा को **स्वधया गृभीत:**(ऋ० १।१६४।३८) कहता है, अर्थात् जीव स्वतन्त्रता से ही बन्धन में पड़ता है।

पुनर्जन्म:-

कुछ भोग ऐसे हैं जो जन्म के साथ आते हैं जैसे वंशज स्वभाव, वंशज स्वास्थ्य, वंशज सम्पत्ति आदि। ये इस जीवन के कर्म के फल नहीं, न ही इस जीवन के सभी कर्म इस जीवन में फलित हो जाते है। यदि ऐसे भोगों और कर्मों को आकस्मिक मान लिया जाए तो पुरुषार्थवाद के लिए कोई यौक्तिक आधार नहीं रहता। जीवनों की एक श्रृंखला प्रतीत होती है, जो अनादिकाल से चली आती है और अनन्तकाल तक चलती जाएगी।

स मातुर्योना परिवीतो अन्त र्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश।

—ऋ० १।१६४।३२

वह माता के गर्भ में लिपटा हुआ बहुत जन्म धारण करता और भोग को प्राप्त होता है।

पुनर्जन्म के प्रत्यक्ष प्रमाण वे चमत्कारी बालक हैं जो छोटी आयु में गान, कविता तथा उपदेश आदि का कार्य निपुणता से कर सकते हैं। इनसे भी अधिक स्पष्ट और अकाट्य साक्षी उन बालकों की है जो अपने

पूर्व-जन्म का वृत्तान्त सुनाते हैं; और जब उनके निर्देशानुसार उन्हें अपने पूर्व-जीवन के निवास-स्थान में ले-जाकर पूछताछ की जाती है तो उनका वृत्तान्त प्रायः सिद्ध होता है। ऐसे उदाहरण पहले दिए जा चुके हैं।

जीवन्मुक्तिः-

इन सुख-दुःखों के सत्य होते हुए भी आध्यात्मिक आनन्द का रस इतना प्रबल है कि यदि वह प्राप्त हो जाए तो भौतिक सुख-दुःख का उस आनन्द में लोप हो जाता है। भौतिक आनन्द भी संयमपूर्वक ही भोगे जा सकते हैं, अन्यथा वे स्वयं रोग बन जाते हैं; और यह संयम अध्यात्म-पक्ष की चीज है- **तेन त्यक्तेन भुंजीथा।** (४०।१) इसलिये त्यागपूर्वक भोग कर।

वही संयम आत्मवशीकार है। इसी के अभ्यास से मनुष्य आत्मरति को प्राप्त करता है जिससे मुक्ति होती है ।

इन्द्रायेन्दो परिस्रव।

हे अमर सुख की गंगा! संयमी के चारो ओर बह।

यही जीवन की सफलता है।

वेद की आज्ञा स्पष्ट है—

यह इन्दो पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत्।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रायेन्दो परि स्रव।

—ऋ० ९।११४।१

जिसने पवित्र करने वाली आत्मरति के साधनों का अनुष्ठान किया, जिसने अपना मन इस आत्मरति के अर्पण किया, उसे सफल-जन्म कहते हैं। उस आत्मवशीकारी के चारों ओर अक्षय आनन्द की गंगा बहती है।

प्रश्न— लोग कहते हैं कि श्राद्ध में संन्यासी आवे वा जिमावे तो उस के पितर भाग जायें और नरक में जा गि[illegible]

उत्तर— प्रथम तो मरे हुए पितरों का आना और किया हुआ श्राद्ध मरे हुए पितरों को पहुँचाना ही असम्भव, वेद और युक्तिविरुद्ध होने से मिथ्या है। और जब आते ही नहीं तो भाग कौन जायेंगे? जब अपने पाप पुण्य के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था के मरण के पश्चात् जीव जन्म लेते हैं तो उन का आना कैसे हो सकता है? इसलिये यह भी बात पेटार्थी पुराणी और वैरागियों की मिथ्या कल्पी हुई है। हां यह तो ठीक है कि जहां संन्यासी जायेंगे वहां यह मृतक श्राद्ध करना वेदादि शास्त्रों से विरुद्ध होने से पाखण्ड दूर भाग जायेगा। **—सत्यार्थप्रकाश से**

यज्ञ भजन प्रवचन और सम्मान समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द मार्ग मोहनपुरा स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जोधपुर द्वारा श्रावणी पर्व के उपलक्ष में एक दिवसीय यज्ञ भजन प्रवचन और सम्मान समारोह का कार्यक्रम दिनांक 24 अगस्त 2017 को आयोजित किया गया। प्रातः 7:30 से 10:30 एवम् सांय सत्र का 6:30 से 9:00 बजे तक हुए इस कार्यक्रम में आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश आचार्य आर्य नरेश जी हिमाचल प्रदेश, आचार्य आनंद पुरुषार्थी होशंगाबाद, श्रीमान सज्जन सिंह जी कोठारी, लोकायुक्त राजस्थान सरकार, आर्य जगत के धनश्रेष्ठी श्रीमान चन्द्र प्रकाश देवड़ा एवं उनके परिवार के साथ ही जोधपुर के गणमान्य नागरिक व जोधपुर की समस्त आर्यसमाजो के सदस्यगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रातः कालीन सत्र में आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ हुआ जिसके यजमान राजस्थान के लोकायुक्त माननीय श्री सज्जन सिंह जी कोठारी थे। इस यज्ञ में श्रावणी की विशेष आहूतियां दी गई। बीच–बीच में माननीय आचार्य जी वेद मंत्रों की व्याख्या कर रहे थे। यज्ञोपरांत मेरठ से पधारे भजनोपदेशक श्री अजय प्रभाकर ने ईश्वर भक्ति एवं महर्षि महिमा के सुंदर भजन प्रस्तुत किए।

होशंगाबाद मध्य प्रदेश से पधारे प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय आर्यवक्ता आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी ने ऋग्वेद के मन्त्र "ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः । हविष्मन्तो अरंकृतः ।।१।१४।५।। की प्रसंगानरूप व्याख्या करते हुए बताया कि गुण कर्म स्वभाव और स्तर में उत्तम को हम सम्मान देवें; हमारे समकक्ष से मित्रता रखें और हम से कनिष्ठ या इतर को देना शुरु कर दें, तो क्रमशः देवपूजा, संगति करण और दान अर्थात् यज्ञ की उपलब्धि हो जाती है! जहां कहीं भी हमें सदगुण मिले उन्हें चुन लेना चाहिए, अंतर की बुराइयां हम हटाएँ! हम अपने जीवन को सद्गुणों, धर्म और उत्तम कर्म से सजाएँ!

हिमाचल प्रदेश से पधारे आचार्य आर्य नरेश जी ने अपने व्याख्यान में बताया कि मानवचोला धारण कर लेने मात्र से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ नहीं हो जाता या सिर्फ बुद्धि होने के कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी नहीं होता है। श्रेष्ठ तो वह है जो ओ३म का ध्यान करता है; वेद का ज्ञान पाता और फैलाता है; यज्ञ का अनुष्ठान करता और करवाता है; जिन की संताने गौरक्षक और संस्कारी होती है और उसके स्वयम् एवं परिवार में राष्ट्रहित बलिदान की भावना हो।

आचार्य जी ने कहा कि बिना समय दिए देश और धर्म का काम नहीं होगा। इसलिए देश और धर्म का काम करने के लिए घर छोड़ो। विषय और धन में जितना मोह हम लगाए हुए हैं उसका 10 प्रतिशत भगवान एवं उसके कार्य में लगाएँ– राष्ट्र और धर्म का काम निश्चित रूप से होगा क्योंकि परमात्मा तो सर्वदा साथ है ही।

प्रातः कालीन सत्र में मुख्य यजमान राजस्थान के लोकायुक्त माननीय सज्जन सिंह जी कोठारी ने महर्षि की महिमा का बखान करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा मानव कई सहस्राब्दियों में नहीं हुआ। जीवन के हर आयाम में महर्षि ने हमें उत्तम विचारों से अवगत कराया है।

उन्होनें बताया कि इस संसार में विभिन्न गुणों को धारण करने वाले कई महापुरुष हुए हैं। किंतु महर्षि ऐसे महापुरुष थे जिनमें सभी उत्तम गुणों का समावेश था; फिर भी वह निरभिमानी थे – यही उनकी महानता है।

लोकायुक्त ने आगे कहा कि कृतघ्नता इतना बड़ा पाप है कि उसका कोई पश्चाताप ही नहीं है। इसलिए हमें सब कुछ प्रदान करने वाले परमात्मा के प्रति कृतज्ञता अवश्य रखनी चाहिए और उसकी उपासना करनी चाहिए। उपासना से अहंकार का नाश होता है, उपासक निरभिमानी बनता है, कठिन विषयों को सरलता से समझ सकते हैं, बुद्धि तीव्र होती है, विलक्षणता आती है, पवित्रता आती है और संकट में सहाय मिलता है।

उन्होनें कहा कि वेदों के ज्ञान की आवश्यकता इसलिए है कि वेदों का ज्ञान निर्दोष है, निर्भ्रांत है, सत्य है और पूर्ण भी है।

आर्य जगत के स्वनामधन्य विद्वान् आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश ने अथर्ववेद के मंत्र "यज्ञो बभूव स आ बभूव स प्र जज्ञे स उ वावृधे पुनः । स देवानामधिपतिर्बभूव सो अस्मासु द्रविणमा दधातु ।।७।५।२।। की व्याख्या करते हुए बताया कि यज्ञ की महिमा अपार है। उन्होंने योगदर्शन से महर्षि पतंजलि प्रणीत सूत्रों का उद्धरण देते हुए कहा कि मनुष्य को प्रणायाम अवश्य करना चाहिए और ३३ मिनट प्राणायाम अवश्य करें!

सत्र के अंत में महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के कार्यकारी प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी ने ईश महिमा का भजन "जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है" एवं एक आव्हान गीत "मेरी आवाज में आवाज मिलाते रहिए, जागते रहिए और जगाते रहिए" गाते हुए माननीय विद्वज्जनों, यजमानों कार्यकर्त्ताओं और आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में आर्य जगत के धनश्रेष्ठी श्रीमान चन्द्र प्रकाश देवड़ा भी सपरिवार सम्मिलित हुए कार्यक्रम के सायंकालीन सत्र में आर्य श्रेष्टि श्री चन्द्र प्रकाश देवड़ा के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया जिसमें पूरा देवड़ा परिवार यजमान था। यज्ञ के उपरांत निर्माण के अंतिम चरण की ओर अग्रसर महर्षि दयानंद योग साधना सत्संग भवन में हुए कार्यक्रम की शुरुआत में मेरठ से पधारे भजनोपदेशक श्री अजय प्रभाकर ने महर्षि महिमा का सुंदर गीत "ऋषि क्या फरिश्ता था, दिलों को करार दे गया.." प्रस्तुत किया।

होशंगाबाद मध्य प्रदेश से पधारे प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय आर्यवक्ता आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी ने सामवेद के मन्त्र ओ३म् नाभि यज्ञाना सदन रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त । वैश्वानर रथयमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ।। २।८।३।३।। की प्रसंगानुरूप व्याख्या करते हुए कहा कि देवता अर्थात पवित्र लोग यज्ञ की धुरी अर्थात केंद्र बनने वाली, उच्च और उदात्त स्वभाव वाली, धन–धान्य और ऐश्वर्य से संपन्न, हर प्रकार की विपत्तियों का नाश करने वाली, नेतृत्व प्रदान करने वाली, यज्ञ और विश्व कल्याण में लगे हुए लोगों की रक्षक और धर्मध्वजा को चारों दिशाओं में फहराने वाली संतान उत्पन्न करते हैं। प्रख्यात विद्वान श्री ईश्वरचंद विद्यासागर जी के जीवन की एक घटना बताते हुए आचार्य श्री ने दान की महत्ता अपार बताई और कहा कि दान का उत्तम फल तो मिलता ही जाता है।

हिमाचल प्रदेश से पधारे आचार्य श्री आर्य नरेश जी ने कहा कि जब कर्म क्षेत्र में उतरने का निश्चय करके मनुष्य खड़ा होता है तो वह स्वयं प्रज्वलित यज्ञ कुंड बन जाता है। उसका सिर यज्ञ की ज्वाला बन जाता है। आर्य समाज की पहचान त्याग एवं यज्ञ है। परमात्मा उसे ही स्वीकार करता है जो त्यागी होता है। आर्य समाज के आर्यश्रेष्ठियों की परंपराओं से परिचित कराते हुए आचार्य श्री ने कहा कि आर्य समाज जैसी संस्था के लिए दान देना बहुत ही उत्तम कार्य है। साथ ही उन्होंने निवेदन किया कि धर्म की पालना में शर्म नहीं आनी चाहिए; शर्म तो पाप करने से आनी चाहिए।

इस कार्यक्रम में आर्य जगत के धनश्रेष्ठी श्रीमान चन्द्रप्रकाश देवड़ा ने अपना सात्विक दान 21 लाख रुपए महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर को अर्पित किये। 21 लाख रुपए की धनराशि के चैक श्री देवड़ा ने मंच पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के कार्यकर्ता प्रधान श्री विजय सिंह भाटी , मंत्री श्री आर्य किशनलाल गेहलोत, राजस्थान के लोकायुक्त माननीय श्री सज्जन सिंह जी कोठारी, आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीश, आचार्य श्री आर्य नरेश जी एवं आचार्य श्री आनंद जी पुरुषार्थी को सुपुर्द किया। न्यास द्वारा देवड़ा परिवार के उपस्थित पुत्र–पुत्रवधु, पुत्रियों– दामादों सहित पूरे परिवार का माल्यार्पण एवं शाल, साफा द्वारा अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास की ओर से धनश्रेष्ठी श्री चंद्रप्रकाश जी देवड़ा को प्रशस्ति पत्र राजस्थान के लोकायुक्त माननीय श्री सज्जन सिंह जी कोठारी, आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीश, आचार्य श्री आर्यनरेश जी, आचार्य श्री आनंदजी पुरुषार्थी, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के कार्यकर्ता प्रधान श्री विजय सिंह भाटी, मंत्री श्री आर्य किशनलाल गेहलोत एवं कोषाध्यक्ष श्री जय सिंह गेहलोत (पालड़ी) द्वारा भेंट किया

गया। प्रशस्ति पत्र भेंट करने से पूर्व इसका वाचन किया गया!

इस अवसर पर अपने संस्मरण ताजा करते हुए धनश्रेष्ठी श्री चंद्रप्रकाश जी देवड़ा ने बताया की वर्ष 1972 में महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में आयोजित प्रथम श्रावणी पर्व के उत्सव में वे मुख्य यजमान थे। आयु के 75 वसंत पूर्ण करने पर अमृत महोत्सव को स्मृति भवन के उस 45 वर्ष पुराने यादगार क्षण को ताजा करने के लिए 24 अगस्त के दिन ही स्मृति भवन में आयोजित किया। सभी आगंतुकों को उन्होंने ऋषि लंगर हेतु आमंत्रित किया।

आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीश ने आशीर्वचन प्रदान किए। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में सभी न्यासी एव जोधपुर की सभी आर्य समाजो के सदस्य गण समस्त देवड़ा परिवार एवं उनके अतिथि भी सम्मिलित हुए! कार्यक्रम का संचालन कमल किशोर आर्य द्वारा किया गया।

(फोटुएँ आवरण पृष्ठ 2 पर देखें)

अपाहिज व बेसहारा गौधन की रक्षार्थ जोधपुर की प्राचीनतम

महर्षि दयानन्द गौशाला,मण्डोर

—आर्यसमाज जोधपुर रातानाड़ा के अन्तर्गत

यह गौशाला जोधपुर की 104 वर्ष पुरानी गौशाला है इसमें गायों की देखभाल उचित ढंग से की जाती है आप भी अपना समय एवं दान देकर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं । अत: आप द्वारा दिया गया दान 80जी के तहत छूट प्राप्त है । आप एवं अपने सहयोगियों से गौशाला में दान देकर 80जी की छूट प्राप्त कर लाभ प्राप्त कर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं ।

U Co Bank A/c 05630110041192
मण्डोर ब्रांच IFSC UCBA0000563

सचिव
दुर्गादास वैदिक

ऑखो की निःशुल्क जाँच व चश्मा वितरण

गोकुलजी की प्याऊ स्थित आर्य समाज मन्दिर महर्षि पाणिनि नगर पूजंला एवं गैर सरकारी संगठन "शार्प" के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार 30 अगस्त को आर्य समाज के प्रांगण में निःशुल्क आँखों की जाँच व निःशुल्क ही चश्मा वितरण का शिविर आयोजित किया गया जिसमें 152 लोगों ने लाभ उठाया। आर्य समाज के प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया की डॉ.प्रहलाद तँवर टेक्नीशियन द्वारा चश्मो के नम्बर दिये गये। शिविर में बिरदाराम, सोहेब, श्रीमती संतोष आर्या, ललीता सांखला, सरोज भाटी, अशोक आर्य, सोहन सिंह गहलोत एवं चेतन प्रकाश का सहयोग रहा।

विश्व शान्ति यज्ञ संपन्न

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वाधान में १६ अगस्त से प्रारम्भ वेद कथा के समापन दिवस पर रविवार २० अगस्त २०१७ को आचार्य आनन्द पुरुषार्थी (होशंगाबाद, म. प्र) के ब्रह्मत्व में १०८(एक सौ आठ) यजमान जोड़ों ने अट्ठाईस यज्ञ वेदियों पर विराजकर पारिवारिक सुख–शान्ति–समृद्धि, सामाजिक मेल–मिलाप, राष्ट्र कल्याण एवं विश्व शान्ति हेतु अत्यन्त श्रद्धायुक्त वातावरण में वेदमन्त्रों द्वारा यज्ञ में आहूतियाँ प्रदान कीं। आचार्य जी ने यजमानों से दक्षिणा के रूप में प्रतिदिन माता–पिता एवं बुजुर्गों को प्रणाम, संध्या–वन्दन –यज्ञ, स्वाध्याय करने एवं काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार आदि शत्रुओं को छोड़ने का संकल्प करवाया। उन्होंने अपने प्रवचन में वेद एवं सोलह संस्कारों की विस्तृत व्याख्या की । श्रीमती राधा त्रिवेदी एवं श्री इन्द्रदेव पीयूष ने मधुर वाणी में भजन प्रस्तुत किये। श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री, आर्यसमाज हिरण मगरी सेक्टर ४ ने बताया कि वेदकथा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ, भजन एवं वेद मन्त्रों की व्याख्या अत्यन्त सरल भाषा एवं कथानकों के माध्यम से श्रोताओं ने सुनी एवं हृदयंगम की। विभिन्न दिनों में मुख्य अतिथि के रूप में पुलिस व जेल के उच्च अधिकारियों को आमंत्रित किया गया। पाँचों दिन की कथा को पर्याप्त मीडिया कवरेज मिला व समाचार पत्रों में विवरण प्रकाशित हुए। आचार्यजी के आग्रह पर नगर के अनेक प्रसिद्ध विद्यालयों में उनके प्रवचन आयोजित किये जिनमे शिशु भारती उच्चतर माध्यमिक शाला, सेक्टर ५; ज्ञान मंदिर हायर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर ४; व आलोक पब्लिक स्कूल सेक्टर ११ सम्मिलित है। इसका विद्यार्थियों एवं स्कूल स्टाफ पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। विश्व प्रसिद्ध नारायण सेवा संस्थान के अस्पताल व विभिन्न कार्य कलापों को आचार्य जी को दिखाया गया तथा संस्थान के संस्थापक श्री कैलाश मानव जी से पुरुषार्थी जी के साथ आर्यजनो ने १६ अगस्त को मुलाकात की। इस बार का वेद प्रचार का यह पंचदिवसीय कार्यक्रम अनेक प्रकार से विशिष्ट उपलब्धियों से भरा रहा । २० अगस्त को आर्य समाज की ओर से ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया ।

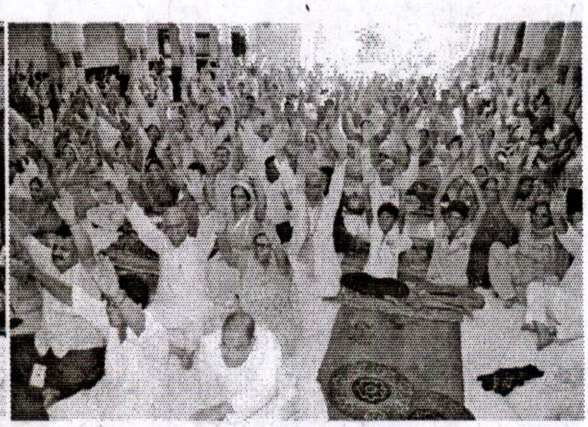

समाचार समीक्षा

इस स्तंभ में देश दुनिया के समाचारों की समीक्षा की जा रही है।

१. बाबा गुरमीत राम रहीम सिंह इंसा की हैवानियतः

बाबा राम रहीम के समाचार से सभी अवगत है। तथापि कुछ तथ्य प्रस्तुत हैः

मई 2002 में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह पर यौन शोषण के आरोप लगाते हुए डेरा की एक साध्वी ने गुमनाम पत्र तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को भेजा था। पत्र की एक प्रति पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को भी भेजी गई। हाईकोर्ट ने 24 सितंबर 2002 के साध्वी यौन शोषण मामले में जाँच के आदेश दिए। पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने 10 नवंबर 2003 को सीबीआई को एफआईआर दर्ज कर जाँच के आदेश जारी किए। 31 जुलाई 2007 को हत्या और साध्वी यौन–शोषण मामले में जाँच पूरी हुई, तब सीबीआई ने तीनों मामलों में डेरा प्रमुख गुरमीत सिंह को मुख्य आरोपी बनाया। डेरा ने सीबीआई के विशेष जज को भी धमकी भरा पत्र भेजा जिसके चलते जज को भी सुरक्षा मांगनी पड़ी। 25 अगस्त, 2017 को राम रहीम को रेप के मामले में पंचकुला की सीबीआई अदालत ने दोषी करार दिया।

इस पाखंडी को दोषी ठहराए जाते ही मुख्यतः पंचकूला एवं हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली आदि कई स्थानों पर डेरा सच्चा सौदा के अनुयायियों ने दंगे किए, वाहन जलाए। हिंसा में लगभग 40 व्यक्ति मारे गए एवं सैकड़ों करोड़ रुपयों का नुकसान हुआ।

दो शिष्याओं के साथ 18 साल पहले दुष्कर्म करने और आपराधिक धमकी देने के अपराध में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को सोमवार 28 अगस्त 2017 को 20 साल जेल की सजा सुनाई गई और 30 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया हैं।

पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने इस मामले में डेरा के अनुयायियों द्वारा कारित हिंसा पर संज्ञान लेते हुए आदेश जारी किया है कि बाबा राम रहीम को सजा सुनाए जाने के बाद हुए दंगों में नुकसान का आकलन किया जाए एवं उसकी भरपाई डेरा की संपत्ति से की जाए। नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

समीक्षाः

इस पूरे समाचार में धर्म की आड़ में ऐषणाओं की पूर्ति, अंधश्रद्धालुओं द्वारा सत्य की भी अनदेखी एवं वोट के चक्कर में शासन द्वारा समर्पण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पता नहीं कितने बाबा लोग हैं जो धर्म की आड़ में पहले नाम कमाते हैं, श्रद्धा का दुरुपयोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति में और ऐश्वर्य की बढ़ती में करते है; अपनी संपेत्ति, धाक और राजनीतिक पहुंच बढ़ाते हैं। धर्मगुरु का बाना पहनकर अधर्म का नंगा नाच करते उन्हें शर्म भी नहीं आती।

राजनेता वोटो के चक्कर में इन पाखंडियों के अन्ध श्रद्धालुओं को रिझाने के लिए इन पाखंडियों की हाजिरी बजाते हैं, सुविधाएं देते हैं और उनके पापों को नजरअंदाज करते हैं। साथ ही इन्हें फलने–फूलने में पूरी मदद करते हैं।

इस पूरे घटनाक्रम में देखने की बात यह थी कि 15 वर्ष से जिस व्यक्ति पर दुराचार का मामला चल रहा हो; उससे पूर्व भी एवं उसके बाद भी कई विवादों और अवचारों में जो व्यक्ति लिप्त रहा हो–उसे किलेबंदी की छूट क्यों मिल गई ? उस किलेबंदी से संभावित नुकसान से बचने का बहाना ले सरकार ने एक अपराधी को शाही अंदाज में न्यायालय पहुँचने की अनुमति दी और उसके अनुयायियों को एकत्रित होने की छूट भी दी। डेरा मुख्यालय में किलेबंदी करना यह जाहिर करता है कि डेरा प्रमुख को अंदेशा था दोष सिद्ध होने का। किन्तु शासन को तो मामले की प्रगति से पता चला भी होगा कि यह व्यक्ति दोष सिद्ध होने वाला है ; तो क्यों डेरा मुख्यालय को किला बनने दिया ? क्यों पंचकूला में डेरा अनुयायियों को इकट्ठा होने दिया ? क्या वह एक अपराधी पर फूल वर्षा करने के लिए एकत्रित हुए थे या जनता को मिठाई बाँटने?

डेरा प्रमुख, रामपाल और आसाराम के अनुयायियों की अंधश्रद्धा देखकर आप कैसे अंगुली उठा सकते हैं कश्मीर के पत्थरबाजों पर ? दिमाग का दिवालियापन, अंधश्रद्धा और जूनून क्या कश्मीर में ही दिखता है? आसाराम बापू की पेशी के दिन जोधपुर में देख लो और अनपढ़ रामपाल के मामले में हरियाणा में देखा ही था और अब भी देख रहे हैं।

इसी बहाने से पाखंडी रामपाल से संबंधित एक समाचार पर भी विचार आवश्यक है। अभी अभी समाचारों में छपा था कि रामपाल को सरकारी कार्य में बाधा डालने के आरोप से बरी कर दिया गया है। उस समय के अखबार देखिए– जिसने अपने आश्रम में किलेबंदी की, गोलियां चलाकर हत्याएँ तक कर दी। फिर भी रामपाल राजकाज में बाधक नहीं है – कितने आश्चर्य की बात है ?कितनी मुश्किल से सरकार ने उसको बाहर निकाला था और सरकारी अदम पैरवी के कारण वह इस आरोप से मुक्त हो गया। यह दर्शाता है कि ऐसे ढोंगी और पाखंडी लोगों के अंध श्रद्धालु हर जगह बैठे होते हैं और हर स्तर पर उन्हें मदद कर रहे हैं। संभव है एक दिन राम रहीम भी बरी हो जाए, आसाराम भी बरी हो जाए और रामपाल भी। सजा भुगतने के लिए भोली जनता तो है ही।

<u>२. डोकलाम विवाद</u>

डोकलाम विवाद के तथ्यों से भी पाठकगण अवगत होंगे। चीन की दादागिरी के सामने भारत ने इस बार जो अंगद का पांव जमाया, उसके परिणाम लंबे समय तक सामने आते रहेंगे। जब तक चीन में अमानवीय सत्ता रहेगी तब तक भारत को इस घटना के फलस्वरूप चीन का विरोध हर स्तर पर झेलना ही पड़ेगा। ब्रिक्स सम्मेलन में भी चीन बाज नहीं आया। पाक प्रायोजित आतंकवाद के मुद्दे पर भारत का विरोध एवं पाकिस्तान का समर्थन किया।

भारतीयों को चीनी शासकों की प्रवृत्ति समझकर सदैव सजग और आक्रामक रहने की जरूरत है। जो शासन स्वर्ण पदक के लिए मासूम बच्चों को व्यायाम के नाम पर सर्कस के जानवरों की भांति प्रशिक्षण देते हुए उनका बचपन छीन लेता हैं; थ्यानानमन चौक पर देश के नवयुवकों को खेत में घुस आए जंगली जानवरों की भाँति गोलियों से भून देता हैं ; जो लोग तिब्बत में अमानवीय अत्याचार करते हैं ; ब्रिटेन से मुक्त हांगकांग को अधित कर लेते हैं; जो

दुनिया को त्रस्त कर बाजार पर कब्जा जमाने के लिए अपनी मुद्रा का प्रायोजित अवमूल्यन करता है – ताकि कोई चीज विदेशी मुद्रा में निर्यात हो तो घरेलू मुद्रा अधिक मिले एवं कोई आयात करना चाहे तो उसे विदेशी मुद्रा के बदले अत्यधिक देशी मुद्रा देनी पड़े। दुनिया के सारे देश चीन से निवेदन कर चुके हैं, किंतु जो देश पता नहीं किस स्वार्थ में अंधा होकर हर स्तर पर मानवता को तिलांजलि दे चुका है, उसकी सत्ता पर भारत कभी भी विश्वास नहीं कर सकता ; ना ही किसी भारतीय को करना चाहिए।

३. नोटबंदी एवं जीएसटी:

भारत के आर्थिक ज़गत में ग्रह दोनों ही घटनाएं बहुत ही महत्वपूर्ण है। साथ ही ऐतिहासिक भी। इतिहास में यह दोनों घटनाएँ स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो सकती थी, यदि इनको सत्यनिष्ठा से लागू किया जाता। भारत के माननीय वित्त मंत्री के इस बयान पर दुख हुआ कि उन्हें पता चला कि नोटबंदी में गड़बड़ियां हुई थी। जीएसटी के बाद देश का उत्पादन और सेवाओं का चलन अत्यधिक कम हुआ है जो सरकारी दावों को प्रश्नगत करता है।

समीक्षा

नोटबंदी के समय आमजन कतारों में लगे थे, भाड़े के लोग भी कतारों में लगे थे, राजनेताओं के रिश्तेदारों से करोड़ों और अरबों रुपयों की नवीन मुद्रा बरामद हो रही थी, सामाजिक मीडिया पर राजनेताओं के परिजन 2000 के नोटों की गड्डियां लिए दिखाई देते थे। जबकि नियमानुसार कुछ नोट ही ले पाते। सरकारी और सहकारी बैंकों में नवीन मुद्रा की अत्यधिक कमी थी, किंतु प्राइवेट बैंक लाखों और करोड़ों रुपए के पुराने नोट बड़े सहज भाव से बदल देते! कैसे सफल हो सकती थी नोटबंदी! जब गड़बड़ियों का पता वित्त मंत्री तक पहुंच चल जाता है और तो उसके स्तर का पता सहज ही लग जाता है। किंतु कार्यवाही कोई नहीं–यह दुःखद है।

यही हाल जीएसटी का है। मुझे प्रतीक्षा है उन वस्तुओं की सूची की जो जीएसटी लागू होने के बाद सस्ती हुई। जनता और व्यापारी दोनों ही नहीं चाहते कि जीएसटी को व्यवहार में लाया जाय। सरकार यह कहकर पल्ला झाड़ लेती है कि जनता को हर माल का बिल मांगना चाहिए। सरकारी कारिंदों पर कोई जिम्मेवारी नहीं।

आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य ने कहा था कि एक राजा को प्रजा से कर उसी प्रकार लेना चाहिए जिस प्रकार एक मधुमक्खी पूर्व को बिना कष्ट पहुंचाए मधु एकत्र करती है।

शासन को सिर्फ खजाना भरने की पड़ी है। मगरमच्छ और बड़ी मछलियां आराम से तैरती हुई छोटी मछलियों को निगल रहे हैं। कोई भी उनका प्रतिनिधि या स्वामी नहीं है।

४. निजता के अधिकार की बहस

निजता के अधिकार के सवाल पर गुरुवार २४ अगस्त २०१७ को नौ जजों वाली सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने पूर्व निर्णयों को उलटते हुए सर्वसम्मति से निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार बताया है। पीठ ने कहा कि निजता का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत दिए

गए जीने के अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हिस्सा है। निर्णय में कहा है कि निजता कोई अभिजात्य विचार नहीं है, जो सिर्फ अमीरों के लिए हो। निजता सभी वर्गों के लिए है। सरकार को डेटा प्रोटेक्शन के लिए ऐसा कानून लाना चाहिए जो आम लोगों और सरकार के बीच हितों का सामंजस्य बैठा सकें।

समीक्षा

आम लोगों और सरकार के बीच हितों का सामंजस्य कैसे हो ? निजता का यह मुद्दा देश में नवीन नहीं है। चिट्ठी–पत्र के जमाने में भी सत्ता पक्ष द्वारा अपने स्वार्थों के लिए विपक्षी राजनेताओं एवं अन्य विरोधियों के पत्र सेंसर करने के आरोप लगते रहे हैं। इसके बाद टेलीफोन टेप के प्रकरण भी होते रहे हैं और मोबाइल टेपिंग कांड भी। दृश्य–श्रव्य और तरंगमय सूचना क्रांति के बाद निजता बहुत ही अधिक खतरे में पड़ गई है।

किंतु यह निजता है क्या ? निजता उस में समाहित लोगों की संख्या के सापेक्ष है। मेरे बैंक खाते की जानकारी, मुझ से संबंधित कोई भी जानकारी – जिसे मैं किसी अन्य के साथ बांटना नहीं चाहूं – वह मेरी अकेले की निजता है और मेरे जीवित रहते उस पर मेरे किसी परिजन का हक भी नहीं हो सकता। ऐसी ही कोई भी जानकारी किन्ही दो मानवों के बीच भी हो सकती है। जैसे कि गुरु–शिष्य, पति–पत्नी, भाई–भाई, भाई–बहन, व्यापारिक साझेदार आदि के मध्य। वे भी अगर नहीं चाहे कि उनके बीच की कोई जानकारी कोई अन्य जाने तो यह उनकी निजता है। इसी प्रकार दो से अधिक मनुष्य की सामूहिक निजता की भी हम कल्पना कर सकते हैं और इस निजता के रक्षण का उन्हें पूरा अधिकार होना भी चाहिए – यदि उस निजता की आड़ में अन्य व्यक्ति, समाज, राष्ट्र या दुनिया के नुकसान की बातों को न छुपाया जा रहा हो। यदि कोई व्यक्ति निजता की आड़ में अपराध को छुपाना चाहे तो वह निजता नहीं है, क्योंकि उसका संबंध उस तथाकथित निजता के से अनजान लोगों से भी है। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि निजता की आड़ में अपराध नहीं पनपे और अपराध पर नियंत्रण की आड़ में निजता पर हमला ना हो।

एक विशेष बात और है कि जो पहचान आपको शासन द्वारा दी जा रही है वह आपकी निजी नहीं हो सकती। हाँ यह अवश्य है कि यदि उस पहचान का उपयोग कहीं अनिवार्य किया जाता है तो उस पहचान के साथ एक और नितांत निजी और संबंधित व्यक्ति परक कोई ऐसी क्रियाविधि भी साथ में लागू हो जिससे कि शासन प्रदत्त पहचान के खुल जाने पर भी वहाँ मनुष्य को हानि ना हो। जैसे कि कहीं आधार अनिवार्य किया गया हो तो आधार के साथ बैंक के लेन देन की भांति ओटीपी अनिवार्य हो, ताकि आधार कार्ड धारक व्यक्ति निश्चिंत हो जाए कि मेरा आधार नंबर दुनिया भी जान लें तो भी मुझे नुकसान नहीं हो सकता। तब वह सरकार के किसी अभियान पर आपत्ति न कर सकेगा।

ओ३म्　　　न्यास कार्यालय ०२९१–२५१६६५

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।। ऋग्वेद ९.६३.५ ।।

ऋषि स्मृति सम्मेलन

गुरूवार से सोमवारम.द.स. योग, साधना सत्संग भवन

२८, २९, ३० सितम्बर १, २ अक्टूबर 2017

ऋग्वेद यज्ञ, भजन एवं प्रवचन

ऋग्वेद यज्ञ ब्रह्माः आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश वेदपाठी आचार्या अन्नपूर्णाजी एवं उनकी शिष्याएँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास 134 वॉ ऋषि स्मृति सम्मेलन दिनांक 28 सितम्बर से 2 अक्टूबर को बड़ी धूमधाम से मनाने जा रहा है जिसमें सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को आमन्त्रित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। आप सभी आर्यजन व धर्मप्रेमी महानुभावों से निवेदन है कि 5 दिवसीय ऋग्वेद पारायण यज्ञ, भजन व प्रवचन में ईष्ट मित्रों, परिवार सहित पधार कर धर्मलाभ से अपना जीवन सफल बनावें।

आमंत्रित संन्यासी, विद्वान् एवं अतिथिगण

स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती उड़ीसा
स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती आबूपर्वत
स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती उत्तराखण्ड
स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती दिल्ली
स्वामी अग्निव्रत जी नैष्ठिक भीनमाल
स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती सांसद, सीकर
श्री कैलाश कर्मठ, भजनोपदेशक, कोलकाता

श्रीमान् सुरेशचन्द्र आर्य,
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश
आचार्य वेदपाल जी, मेरठ
आचार्य कमलेशकुमार अहमदाबाद
आचार्य सुधीरकुमार आर्य दिल्ली
आचार्य अन्नपूर्णा जी देहरादून
आचार्य चन्द्रेशजी गाँधीधाम

श्रीमान् ठाकुर विक्रमसिंह दानवीर आर्यश्रेष्ठी, मेरठ
श्रीमान् चन्द्रप्रकाशजी देवड़ा दानवीर आर्यश्रेष्ठी, जयपुर
डॉ0 आनन्दकुमारजी (आई.जी.) दिल्ली
श्रीमान् दीनदयाल जी गुप्ता प्रधान, आ.प्र.सभा, दिल्ली

श्रीमान् धर्मपाल जी आर्य, प्रधान, आ.प्र.सभा, दिल्ली
श्रीमान् डॉ0 सुधीरकुमार जी शर्मा,
मन्त्री, आ.प्र.सभा, राज0.
आचार्य सत्यजित जी अजमेर

विशेषः बाहर से आने वाले आर्य सज्जनों के लिए भोजन एवं आवास की व्यवस्था न्यास द्वारा की गई है। कृपया आगमन की पूर्व सूचना देने का श्रम करावें।

Postal Reg. Jodhpur/434/2015-17
जोधपुर आर एम एस द्वारा वितरण
Date of Print 5-9-2017
Date of Posting 9,10-9-2017

ऋषि स्मृति सम्मेलन

कार्यक्रम

२८, २९, ३० सितम्बर १, २ अक्टूबर 2017

कार्यक्रम

गुरूवार २८ सितंबर २०१७

प्रातः ५:३० से ६:३०: आसन प्राणायाम ध्यान
प्रातः ७:१५ से ८:३० तक ऋग्वेद यज्ञ
प्रातः ८:४० से ९:४० तक ध्वजारोहण एवं शालाकर्मविधि (नवनिर्मित भवन का लोकार्पण)
प्रातः ९:४० से १०:०० बजे प्रातराश
प्रातः १०:०० से १:०० बजेः भजन प्रवचन
विषयः ऋषि प्रतिपादित आर्ष पद्धति का महत्त्व
सायंः ६:१५ से ७:०० दैनिक यज्ञ एवं सन्ध्या
सायंः ७:३० से १०:०० भजन व प्रवचन
विषयः प्रभुभक्ति से जीवन का उत्थान

शनिवार ३० सितंबर २०१७

प्रातः ५:३० से ६:३०: आसन प्राणायाम ध्यान
प्रातः ७:३० से ९:३० तक ऋग्वेद यज्ञ
प्रातः ९:३० से १०:०० बजे प्रातराश
प्रातः १०:०० से १:०० बजेः भजन प्रवचन
विषयः पितृयज्ञ का महत्त्व और प्रकार
अपराह्न ३ से ५ बजेः महिला सम्मेलन
सायंः ६:१५ से ७:०० दैनिक यज्ञ एवं सन्ध्या
सायंः ७:३० से १०:०० भजन व प्रवचन
विषयः मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन से शिक्षा

शुक्रवार २९ सितंबर २०१७

प्रातः ५:३० से ६:३०: आसन प्राणायाम ध्यान
प्रातः ७:३० से ९:३० तक ऋग्वेद यज्ञ
प्रातः ९:३० से १०:०० बजे प्रातराश
प्रातः १०:०० से १:०० बजेः भजन प्रवचन
विषयः सन्ध्या उपासना का प्रकार और उससे उपलब्धि
सायंः ६:१५ से ७:०० दैनिक यज्ञ एवं सन्ध्या
सायंः ७:३० से १०:०० भजन व प्रवचन
विषयः आर्यसमाज और चरित्र निर्माण

रविवार ०१ अक्टूबर २०१७

प्रातः ५:३० से ६:३०: आसन प्राणायाम ध्यान
प्रातः ७:३० से ९:३० तक ऋग्वेद यज्ञ
प्रातः ९:३० से १०:०० बजे प्रातराश
प्रातः १०:०० से १:०० बजेः भजन प्रवचन
विशयः अतिथि के लक्षण और अतिथियज्ञ
अपराह्न ३ से ५ बजेः युवा सम्मेलन
सायंः ६:१५ से ७:०० दैनिक यज्ञ एवं सन्ध्या
सायंः ७:३० से १०:०० भजन व प्रवचन
विषयः योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन का सिंहावलोकन

सोमवार ०२ अक्टूबर २०१७

प्रातः ५:३० से ६:३०: आसन प्राणायाम ध्यान
प्रातः ७:३० से ९:३० तक ऋग्वेद यज्ञ
प्रातः ९:३० से १०:०० बजे प्रातराश
प्रातः १०:०० से १२:०० बजेः भजन प्रवचन
विशयः गोरक्षा, गौसेवा एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ का महत्त्व

समापूर्ति सत्रः १२:०० से १:००
१२:०० से १२:१५ मंत्रीजी द्वारा प्रतिवेदन
१२:१५ से १२:३० प्रधानजी द्वारा धन्यवाद व आभार
श्री विजयसिंह भाटी, (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान)
१२:३० से ध्वजावतरण व आगामी कार्यक्रम की उद्घोषणा
१:०० बजे से ऋषिप्रसाद

(शेष पृष्ठ १७ पर देखें)

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलिया के पास जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराणा मौहल्ला केरू हाऊस जोधपुर फोन 9829392411 से मुद्रित ।
सम्पादक माबाईल नं. 9460649055